Teachers'
Manual

हिन्दी व्याकरण

1 to 5

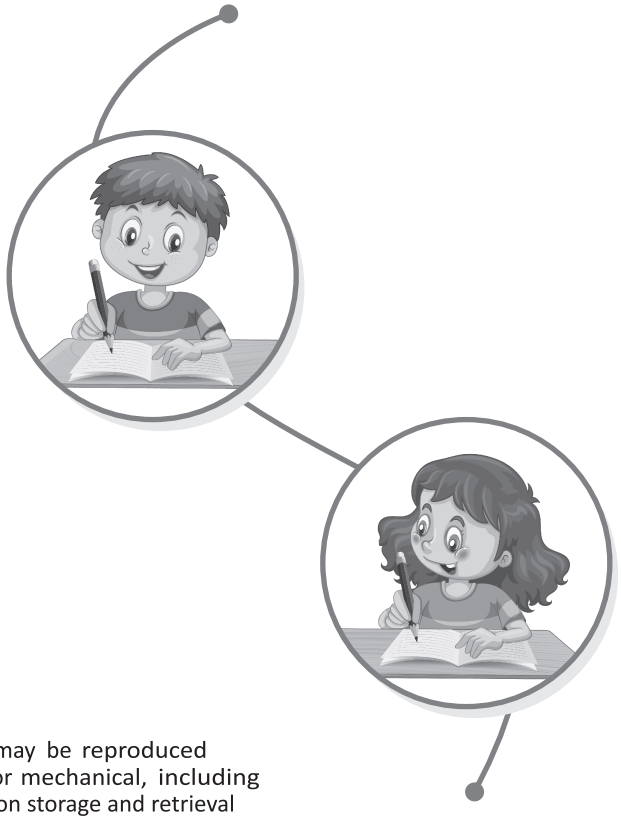

© Publishers

All Rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form by any means, electronic or mechanical, including photocopying and recording, or by any information storage and retrieval system, except as may be expressly permitted in writing by the publisher.

Every care has been taken to minimize the mistakes regarding printing and other aspects of the book. However, there is always a scope of improvement. Any suggestion for further improvement of this book would be greatly acknowledged. Published and a product of Student Advisor Publications Pvt. Ltd. E-38, Industrial Area, Mathura (UP)

हिन्दी व्याकरण-1

पाठ — 1
मेरा परिचय

नोट: छात्र अपना परिचय देते हुए इसे (पाठ को) स्वयं करें।

पाठ — 2
भाषा

अभ्यास

मौखिक

1. भाषा के तीन रूप हैं।

2. भाषा के तीनों रूपों के नाम हैं—मौखिक, लिखित और सांकेतिक।

लिखित

- मौखिक लिखित सांकेतिक
  मौखिक लिखित सांकेतिक

आओ कुछ करें

- छात्र स्वयं करें।

पाठ — 3
वर्ण और वर्णमाला

अभ्यास

मौखिक

(क) भाषा की छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके टुकड़े न किए जा सकें 'वर्ण' कहलाती है।

(ख) वर्णों के व्यवस्थित समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं।

(ग) हिन्दी वर्णमाला में मूलत: 11 स्वर हैं।

(घ) हिन्दी वर्गमाला में 33 व्यंजन हैं।

लिखित

1. **(क)** (ब) वर्ण
(ख) (ब) ग्यारह
(ग) (स) अयोगवाह
(घ) (ब) 33

2. अनार, अन्ननास, आम, ईख, आलू।
ककड़ी, कटहल, गाजर, तरबूज, शलगम।

3.

स्वर		व्यंजन	
अ	आ	क	ख
इ	ई	ग	घ
उ	क्र	च	छ
ऋ	ए	ज	झ
ऐ	ओ	त्र	ट
औ		ण	त
		द	न
		प फ ब भ म	य र
		ल व	स ह

आओ कुछ करें

- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

पाठ — 4
मात्राएँ

अभ्यास

मौखिक

- स्वर के बदले हुए रूप को मात्रा कहते हैं।

लिखित

1. ◌ृ, ◌ौ, ◌ी, ◌ु, ◌ा

2. इ, ऊ, ए, ओ, ऐ

3. भालू गुलाब साबुन
थैला केला खिलौना

4. धोबी नौका सेब पैदल
मोहन कौन मेला बैल

पोटली बौना सपेरा मैना
लोमड़ी कौआ खेत पैसा

आओ कुछ करें

- छात्र स्वयं करें।

पाठ — 5
बिंदु(ं) और चन्द्रबिंदु (ँ)

अभ्यास

मौखिक

1. 'अं' के बिन्दु के चिह्न को 'अनुस्वार' कहते हैं।
2. अंक, अंगूर।

लिखित

- मंजन चाँद
  कंघा भँवरा
  रंग मुँह
  लंबा दाँत
  अंगूर हँसना
  तंग बाँसुरी
  जंगल आँगन
  नारंगी गाँव
  संतरी पाँच
  घंटा आँचल

आओ कुछ करें

- पतंग, कंगन, बंदर, आँख, चाँद, ऊँट

पाठ — 6
शब्द और वाक्य

अभ्यास

मौखिक

1. वर्णों के सार्थक मेल को 'शब्द' कहते हैं।
2. शब्दों के सार्थक मेल को 'वाक्य' कहते हैं।

लिखित

1. घर मटर
2. गाड़ी अनार
3. (क) मछली जल की रानी है।
   (ख) घोड़ा सड़क पर दौड़ रहा है।
4. (क) बंदर, केला
   (ख) पुस्तक
   (ग) चिड़िया, दाना
   (घ) कौआ, पानी
   (ङ) तोता, मिर्च

आओ कुछ करें

- अचकन
  अजगर
  शलगम
  शरबत
- पेड़
  लोमड़ी
  अंगूर
  कौआ
  बेल

पाठ — 7
नाम वाले शब्दः संज्ञा

अभ्यास

मौखिक

1. सभी नाम वाले शब्दों को 'संज्ञा' कहते हैं।
2. छात्र अपना नाम लिखें।

लिखित

1. चीता गाजर कबूतर
   बिल्ली अमरूद ताजमहल
2. खरगोश शेर

हाथी फूल
बस तोता

3. छात्र स्वयं करें।

आओ कुछ करें

- 1. सूरज
  2. फूल
  3. चिड़ियाँ
  4. किसान

पाठ — 8
स्त्री–पुरुष : लिंग

अभ्यास

मौखिक

1. जिस शब्द से स्त्री या पुरुष जाति के होने का पता चलता है, उसे 'लिंग' कहते हैं।
2. लिंग के दो भेद होते हैं–
   1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग

लिखित

1.	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
2.	बेटा		बेटी
	मामा		मामी
	बकरा		बकरी
(ग)	दादा		दादी
	लड़का		लड़की
	मुरगा		मुरगी

आओ कुछ करें

- 1. चाची
  2. सिंहनी
  3. बहन
  4. मोरनी
  5. चुहिया

पाठ — 9
एक–अनेक : वचन

अभ्यास

मौखिक

1. एकवचन।
2. बहुवचन।

लिखित

1. **(क)** एकवचन **(ख)** बहुवचन
   (ग) एकवचन **(घ)** बहुवचन
   (ङ) बहुवचन **(च)** बहुवचन
   (छ) एकवचन **(ज)** बहुवचन
2. घोड़े लड़का

रोटियाँ	केला
आँखें	कुर्सी
औरतें	गुब्बारा

आओ कुछ करें

- घड़ी पुस्तकें
  अध्यापिका कलमें
  कूड़ादान लड़के
  थरमस मेजें
  श्याम पट्ट कुर्सियाँ
  कमरा सुइयाँ

पाठ — 10
संज्ञा के स्थान पर : सर्वनाम

अभ्यास

1. नाम वाले शब्दों के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

मौखिक

(ख) अपने से अधिक आयु वालों के लिए 'आप' सर्वनाम शब्द का प्रयोग करेंगे।

लिखित

1. **(क)** मैं **(ख)** मेरा
(ग) तुम क्या **(घ)** वह
(ङ) मैं, आपके

2. **(क)** यह **(ख)** वह
(ग) मैं **(घ)** तुम
(ङ) मेरे

3. मैं – मैं कल जयपुर जाऊँगा।
आप – आप घर कब आ रहे हो।
हम – हम सब खेलेंगे।
यह – यह मेरी किताब है।

आओ कुछ करें

- छात्र स्वयं करें।
- छात्र रंग स्वयं भरें।

पाठ — 11
विशेषता बताने वाले शब्द : विशेषण

अभ्यास

मौखिक

1. मीठा।
2. कड़ुआ।
3. मीठा।
4. लम्बी।
5. गोल।

लिखित

1. लाल ठंडी मोटा
खट्टा सफेद गोल

2. गरम – जलेबी
कड़वा – करेला
गोल – गेंद
लाल – सेब
मीठा – आम

3. **1.** एक **2.** लंबा
3. पीला **4.** चार
5. लंबी

आओ कुछ करें

- **1.** लाल **2.** हरा
3. मीठी **4.** बड़ा
5. ठंडी
- **1.** बड़े **2.** गरम
3. लाल **4.** मीठा
5. खट्टा
- काला तीन ऊँचा
बूढ़ी तीखी छोटा
दो मोटा

पाठ — 12
काम वाले शब्द : क्रिया

अभ्यास

मौखिक

1. जिन शब्दों से वाक्य में किसी काम के होने का बोध होता है उन्हें 'क्रिया' कहते हैं।

प्रश्न (2), (3) और (4) छात्र स्वयं करें।

लिखित

1. खेलना नाचना खाना भौंकना

2. (क) खा (ख) पी
(ग) दे (घ) दौड़

3. चलाना नाचना खाना पढ़ाना
रोना झूलना खेलना बैठी

आओ कुछ करें

- सोना पढ़ना
जागना लिखना
खाना बोलना
खेलना हँसना
लेटना देखना
- नाचना, सोना, उड़ना, रोना, हँसना, पढ़ना

पाठ — 13

समान अर्थ वाले शब्द : पर्यायवाची शब्द

अभ्यास

मौखिक

1. समान अर्थ बताने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

2. हाथी — गज।

लिखित

1.

भगवान	माँ	वायु
पृथ्वी	सूरज	वस्त्र

1. (क) जनक
(ख) बहादुर
(ग) निर्धन

आओ कुछ करें

- सूर्य सूरज — पेड़ वृक्ष — पहाड़ पर्वत

पाठ — 14

विपरीत अर्थ वाले शब्द : विलोम शब्द

अभ्यास

मौखिक

1. विपरीत अर्थ बताने वाले शब्दों को 'विलोम शब्द' कहते हैं।

2. रात — दिन।

लिखित

1.

गर्मी	मीठा	बड़ा

2.

बुरा	रोना	जीत

आओ कुछ करें

- झूठा — मित्र
  गरीब — बाहर
  सीधा — मोटा

पाठ — 15

आओ रचें कहानी

चालाक चूजे

मुर्गी	चूजे		बिल्ली	बिल्ली	दरवाजा
मुर्गी	चूजे		चूजों	बिल्ली	
मुर्गी–चूजों			मिठाई	खिलौने	मिठाई
दरवाजा	चूजों		कुत्ता		
चूजों	खिलौने	मिठाई	बिल्ली	कुत्ते	बिल्ली
चूजों	दरवाजा	मिठाई			
चूजों	चूजे				

पाठ — 16

गिनती : 1 से 10 तक

अभ्यास

मौखिक

1. छात्र स्वयं करें।

2. अब हमें अंग्रेजी-हिन्दी दोनों भाषा में गिनती पढ़ाई जाती हैं।

लिखित

1. (क) (iii) हर भाषा में

(ख) (ii) ७

(ग) (iii) हिंदी अंक

2. (क) – (iii)

(ख) – (iv)

(ग) – (v)

(घ) – (ii)

(ङ) – (i)

3. (क) ७

(ख) ९

(ग) ३

(घ) ४

प्रश्न-पत्र 1

1. थान नल लट्टू

टमाटर रस्सी

2. बंदर बँदरिया

- छात्र रंग स्वयं भरें।

3. मटर, टमाटर, गाजर, जलेबी

प्रश्न-पत्र 2

1. प्रातः सरिता चिड़िया हँसना जलेबी

2. मोहन नहाना जहाज नाव

काला रात

घोड़ा घड़ा

3. ऊपर शाम पास सफेद

❐❐

हिन्दी व्याकरण-2

पाठ — 1
भाषा और व्याकरण

अभ्यास

मौखिक

1. हम मन के भावों को व्यक्त करते समय भाषा का प्रयोग करते हैं।
2. भाषा के दो रूप हैं।
3. हमारी राजभाषा हिन्दी है।

लिखित

1. (क) भाषा
   (ख) व्याकरण
   (ग) देवनागरी
2. (क) (×) (ख) (✓)
   (ग) (×) (घ) (×)
3. 1.मौखिक भाषा (iii) मुख द्वारा बोली जाने वाली भाषा
   2. हिंदी भाषा की लिपि (i) देवनागरी
   3. हमारी राजभाषा (ii) हिंदी
4. (क) मन के भावों तथा विचारों को प्रकट करने के माध्यम को 'भाषा' कहते हैं।
   (ख) किसी भाषा के लिखने के ढंग को 'लिपि' कहते हैं।
   (ग) व्याकरण वह शास्त्र है जिसके द्वारा हम किसी भाषा को शुद्ध पढ़ना, लिखना और बोलना सीखते हैं।
5. लिखित मौखिक मौखिक
   मौखिक मौखिक लिखित

आओ कुछ करें

- छात्र स्वयं करें।

पाठ — 2
वर्ण और वर्णमाला

अभ्यास

मौखिक

1. भाषा की छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके टुकड़े न किए जा सकें 'वर्ण' कहलाती है।
2. वर्णों के क्रमबद्ध समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं।
3. ऐसे वर्ण जो बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता के बोले जाते हैं 'स्वर' कहलाते हैं।
4. ऐसे वर्ण जो स्वर की सहायता से बोले जाते हैं, 'व्यंजन' कहलाते हैं।
5. अयोगवाह वर्ण हैं—'अं' और 'अः'।

लिखित

1. **(क)** वर्णमाला
   (ख) संयुक्त व्यंजन
   (ग) अनुस्वार
   (घ) वर्ण
2. **(क)** (✓) **(ख)** (×)
   (ग) (✓) **(घ)** (×)
3. अ इ ई ऋ
   क त थ द म च र ज
4. **(क)** ड़ ढ़
   अं अः
   (ख) हिन्दी वर्णमाला में स्वर ग्यारह होते हैं।
   (ग) हिन्दी वर्णमाला में व्यंजन तैंतीस होते हैं।

आओ कुछ करें

- छात्र स्वयं करें।

- छात्र स्वयं करें।
- छात्र स्वयं करें।
- अनुस्वार का उच्चारण करते समय वायु नाक से निकलती है; जबकि अनुनासिक का उच्चारण करते समय वायु नाक और मुँह दोनों से निकलती है।

पाठ — 3
मात्राएँ

अभ्यास

मौखिक

1. 'कृषि' शब्द में 'क' में 'ऋ' की मात्रा (ृ) तथा 'ष' में 'इ' की मात्रा (ि) का प्रयोग हुआ।

2. 'करेला' शब्द में 'र' में 'ए' की मात्रा (े) तथा 'ल्' में 'आ' की मात्रा (ा) का प्रयोग का प्रयोग हुआ है।

3. ई—**मीरा**।

4. 'फ' में 'ऊ' की मात्रा (ू) विराम का प्रयोग हुआ है।

लिखित

1.

आम	केला	चील	किताब
कृषक	सेब	थैला	तोता

2. (क) व्यंजनों के साथ स्वरों को एक निश्चित चिह्न के रूप में लगाया जाता है, जिन्हें 'मात्रा' कहते हैं।

(ख) मात्राओं का प्रयोग व्यंजनों के साथ किया जाता है।

3.

1. ी		**6.** ू	
2. ौ		**7.** ृ	
3. े, ा		**8.** ि, ा	
4. ौ, ी		**9.** ा	
5. ु		**10.** ै, ा	

आओ कुछ करें

- मित्र — बुलबुल
  कृषक — फूल
  बैल — कोयल
- कमल — नयन — पवन
  कलश — हवन — भवन
- का — मे
  चौ — ली
  घी — रा
  प् — मि

पाठ — 4
शब्द एवं वाक्य

अभ्यास

मौखिक

1. वर्णों के अर्थपूर्ण मेल को 'शब्द' कहते हैं।

2. शब्दों के अर्थपूर्ण मेल को 'वाक्य' कहते हैं।

लिखित

1.

टहल	मकान
कमल	किताब
मटर	लड़का
केसर	कपड़े
गुलाब	गमला

2. (क) वीर पढ़ रहा है।

(ख) ध्रुव स्कूल जा रहा है।

(ग) बतख तालाब में तैर रही है।

(घ) शेर दहाड़ रहा है।

3. (क) आम

(ख) बाग

(ग) मोर

(घ) पौधा

(ङ) चुहिया

आओ कुछ करें

- क्रिकेट

  पपीता

  हरा

  गाय

पाठ — 5
संज्ञा

अभ्यास

मौखिक

1. छात्र स्वयं करें।

2. सप्ताह के दिनों के नाम–

1. रविवार, 2. सोमवार, 3. मंगलवार, 4. बुधवार, 5. बृहस्पतिवार 6. शुक्रवार, 7. शनिवार।

लिखित

1. तोता हिरण पतंग

2. (क) किसी व्यक्ति, जीव-जन्तु, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम को 'संज्ञा' कहते हैं।

(ख) 1. व्यक्तियों के नाम, 2. वस्तुओं के नाम, 3. इमारतों के नाम, 4. स्थानों के नाम, 5. भावों के नाम।

3. (क) मोहन महात्मागांधी

(ख) मेज कलम

(ग) कोलकाता मुंबई

(घ) बीमारी बुढ़ापा

4. (क) दिल्ली (ख) पटना

(ग) गुरुद्वारा (घ) हिमालय

(ङ) कुतुबमीनार

आओ कुछ करें

- छात्र स्वयं करें।
- **(क)** गुलाब **(ङ)** बकरी

  (ख) जलेबी **(च)** मछली

  (ग) सेब **(छ)** कबूतर

  (घ) दिल्ली **(ज)** पतंग

पाठ — 6
लिंग

अभ्यास

मौखिक

1. अध्यापक, दादा, चाचा, नाना, मामा।

1. अध्यापिका, दादी, चाची, नाना, मामी।

लिखित

1. शिक्षक छात्रा

लड़का नारी

दादा शेरनी

ऊँट बालिका

पुत्र

बकरा

2. छात्र बेटा

पति गायक

शिक्षक कवि

ताऊ मोर

3. **1.** स्त्रीलिंग **5.** स्त्रीलिंग

2. पुल्लिंग **6.** स्त्रीलिंग

3. पुल्लिंग **7.** पुल्लिंग

4. पुल्लिंग **8.** पुल्लिंग

4. (क) जिन शब्दों से पुरुष जाति अथवा स्त्री जाति का बोध होता है, उन्हें लिंग' कहते हैं।

(ख) लिंग के दो प्रकार हैं–

1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग

5. लड़का लड़की

माता पिता

बकरा	बकरी
शेर	शेरनी
घोड़ा	घोड़ी
ऊँट	ऊँटनी
अध्यापिका	अध्यापक

आओ कुछ करें

- दादा
  पिता
  पुत्र
  चाचा
- मेज — कुर्सी
  रमेश — भव्या
  कुत्ता — गाय
  कौआ — कोयल

पाठ — 7

वचन

अभ्यास

मौखिक

1. जिन शब्दों से वस्तुओं या प्राणियों की संख्या में एक या एक से अधिक होने का बोध हो, वे 'वचन' कहलाते हैं।
2. वचन दो प्रकार के होते हैं—
   1. एकवचन   2. बहुवचन।

लिखित

1.

घोड़े	कक्षा
पत्ते	आँख
वस्तुएँ	गुड़िया
लड़के	पुस्तक

2. **(क)** शब्द के जिस रूप से वस्तु या व्यक्ति के एक होने का बोध हो, उसे 'एकवचन' कहते हैं।
   (ख) शब्द के जिस रूप से वस्तुओं या प्राणियों के एक से अधिक होने का बोध हो, उसे 'बहुवचन' कहते हैं।
3. **(क)** कली - कलियाँ
   (ख) मेज़ - मेज़ें
   (ग) पुस्तक - पुस्तकें
   (घ) केला - केले
   (ङ) पत्ता - पत्ते
4.

घोड़ा	घोड़े
लड़का	लड़के
गुड़िया	गुड़ियाँ
बच्चा	बच्चे
रसगुल्ला	रसगुल्ले
आँख	आँखें

आओ कुछ करें

- एकवचन — बहुवचन
  बहुवचन — एकवचन

पाठ — 8

सर्वनाम

अभ्यास

मौखिक

1. संज्ञा के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें 'सर्वनाम' कहते हैं।
2. हम, तुम, वह, मैं, आप।

लिखित

1. **(क)** (iii) हम
   (ख) (i) लड़के
2. **(क)** वह
   (ख) हमने
   (ग) मैं

(घ) मेरी

3. (क) तुम

(ख) मेरे

(ग) मेरा

(घ) हम

4. तुम्हारी — मेरी

मैं — मुझे

मुझे — यह

5. (क) अपने लिए प्रयोग किए जाने वाले सर्वनाम शब्द हैं—मैं, मेरा, मेरी, मुझे, मैंने, हम, हमारा, हमारे, हमारी आदि।

(ख) अन्य के लिए (दूर में) प्रयोग किए जाने वाले वाले सर्वनाम शब्द हैं—वह, वे, उसका, उनके, उसकी, उनकी आदि।

आओ कुछ करें

- छात्र स्वयं करें।
- छात्र स्वयं करें।
- छात्र स्वयं करें।

पाठ — 9
विशेषण

अभ्यास

मौखिक

1. विशेषण

2. सुंदर, लाल, छोटा, पाँच, बड़ा।

लिखित

1. (क) सफेद — स्वेटर

(ख) दो — टॉफियाँ

(ग) सुंदर — घर

(घ) लंबी — गरदन

2. 1. हरी — (i) मिर्च

2. ऊँची — (ii) पहाड़ी

3. रंग-बिरंगी — (iii) तितलियाँ

4. चमकीला — (iv) सूरज

5. सुन्दर — (i) लड़की

1. (क) संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं।

(ख) जिस संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य' कहते हैं।

आओ कुछ करें

● सफेद	नीला	पीला	काला
● छोटा	बड़ा	लंबा	चौड़ा
● दो	तीन	चार	पाँच
● खट्टा	मीठा	तीखा	कड़वा
● अच्छा	पवित्र	योग्य	बुद्धिमान
● थोड़ा	बहुत	दो लीटर	सेरभर

पाठ — 10
क्रिया

अभ्यास

मौखिक

1. क्रिया को।

2. नहीं।

लिखित

1. (क) उड़ा रहा है

(ख) खा रहा है

(ग) तोड़ रहा है

(घ) जोतता है

(ङ) दौड़ता है

2. (क) रिया रो रही है।

(ख) चिड़िया उड़ रही है।

(ग) आओ, स्कूल चलें।

(घ) रामू पढ़ता है।

(ङ) श्याम पत्र लिखता है।

(च) ज्ञानसिंह नहाता है।

3. (क) जिन शब्दों से किसी काम के करने या होने का पता चलता हो, उन्हें 'क्रिया' शब्द कहते हैं।

(ख) चलना, पकड़ना, खेलना, बजाना, नहाना।

4. **1.** दौड़ना **2.** तैरना
3. नाचना **4.** चलाना
5. भौंकना **6.** गाना

आओ कुछ करें

- घर की साफ-सफाई करना, कपड़े धोना, इस्तरी करना, दूध लाना
- पढ़ना, लिखना, खेलना-कूदना, पौधों का पानी देना
- छात्र स्वयं करें।

पाठ — 11
समानार्थी शब्द

अभ्यास

मौखिक

1. समानार्थी शब्दों को।

2. छात्र स्वयं करें।

लिखित

1. पुष्प, दिवस
गृह, नयन

2. (क) वृक्ष, पेड़

(ख) घर, गृह

(ग) नयन, आङ्ख

(घ) बादल, मेघ

3. (क) समान अर्थ बताने वाले शब्दों को 'समानार्थी शब्द' कहते हैं।

(ख) माता—माँ, जननी।
बालक—शिशु, लड़का।

आओ कुछ करें

- छात्र स्वयं करें।
- सूरज, सूर्य, रवि, दिनकर
  चाँद, चन्द्रमा, शशि, इन्दु

पाठ — 12
विलोम शब्द

अभ्यास

मौखिक

1. विलोम शब्द।

2. नीचे

लिखित

1. हँसना, गरीब
जाना, विष
शाम, भलाई
शत्रु, सोना

2. हार, जीत
सुख, दुःख
स्वस्थ, अस्वस्थ
अच्छा, बुरा
प्रकाश, अंधकार

3. (क) जो शब्द एक-दूसरे का विपरीत अर्थ बताते हैं, उन्हें 'विलोम शब्द' कहते हैं।

(ख) विलोम शब्दों को विपरीतार्थी या विपरीतार्थक शब्द भी कहते हैं।

आओ कुछ करें

- आगे, पीछे
  आगे, पीछे
- मोटा, पतला, सुबह, शाम

पाठ — 13
अनुच्छेद–लेखन

अभ्यास

- मेरे विद्यालय का नाम ज्ञान गंगा मंदिर है।
  यह सिद्धार्थ नगर भरतपुर में है।
  मेरे विद्यालय में दो-दो मंजिल की चार इमारतें हैं।
  मेरे विद्यालय में पचास शिक्षक और शिक्षिकाएँ हैं।
  मेरे विद्यालय की भविष्य निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका है।
- लाल बहादुर शास्त्री भारत के महान व्यक्ति थे।
  इनका जन्म 2 अक्टूबर 1904 को मुगल सराय में हुआ था।
  ये भारत के दूसरे प्रधानमंत्री रहे।
  शास्त्री जी को भारत रत्न से सम्मानित किया।
  इन्होंने लोगों को 'जय जवान जय किसान' का नारा दिया।
- होली भारत का प्रमुख त्योहार है।
  यह फाल्गुन महीने की पूर्णिमा को मनाया जाता है।
  गुजिया और पकवान बनते हैं तथा लोग एक-दूसरे को रंग-गुलाल लगाते हैं।
  होली असभ्य तरीके से नहीं मनानी चाहिए।
  यह त्योहार प्रेम और भाईचारे का संदेश देता है।

पाठ — 14
कहानी–लेखन

अभ्यास

खरगोश और कछुआ

- एक जंगल में एक खरगोश और एक कछुआ रहते थे। दोनों गहरे मित्र थे। एक दिन उन दोनों ने कहा कि हम दौड़ लगाकर देखते हैं जो पहले बाग के किनारे पहुँचेगा वही विजयी कहलाएगा। दोनों ने दौड़ शुरू की। खरगोश शुरू में तेज दौड़ा और कछुआ बहुत पीछे रह गया। खरगोश ने सोचा कछुआ पीछे है तब तक आराम कर लूँ। लेकिन खरगोश को नींद आ गई परंतु कछुआ अपनी धीमी चाल से लगातार चलता रहा और खरगोश से पहले निर्णायक रेखा के पास पहुँच गया। जब खरगोश की नींद खुली तो वह हड़बड़ाहट में तेज दौड़ा लेकिन तब तक कछुआ दौड़ जीत चुका था।

शिक्षा—आराम हराम है।

प्रश्न-पत्र-1

1. **(1)** (✓) **(2)** (✗)
(3) (✓) **(4)** (✓)
(5) (✓)

2. **(1)** देवनागरी
(2) व्याकरण

3. वर्णमाला
4. वर्ण

3.

किरण	पुल
बैल	खेल
मृग	माँ

प्रश्न-पत्र-2

1. **(1)** (iii) तुम
(2) (i) काला
(3) (ii) निकेतन
(4) (iv) अंधकार

2. **1.** घर **1.** वट
2. निकेतन **2.** बरगद

3. **1.** मेरे मित्र का नाम पवन है।
2. वह मेरी कक्षा में ही पढ़ता है।
3. पवन आज्ञाकारी बालक है।
4. वह अपने माता-पिता की हर बात मानता है।
5. वह मन लगाकर पढ़ता है।
सभी शिक्षक उससे प्रसन्न रहते हैं।
6. वह हमेशा मधुर बोलता है।

7. वह सुख-दु:ख में सदा मेरे साथ रहता है।
8. मेरा मित्र मुझे बुराई से बचाता है और भलाई की ओर ले जाता है।
9. जीवन में एक अच्छा मित्र होना बहुत जरूरी है।
10. बिना मित्र का जीवन बड़ा सुस्त और उबाऊ लगता है। मुझे अपने मित्र पर गर्व है।

4. एक बार की बात है, एक प्यासा कौआ पानी की तलाश में इधर-उधर भटक रहा था। तभी उसकी नजर एक घड़े पर पड़ी। घड़े में पानी तो था लेकिन कौए की चोंच उस पानी तक नहीं पहुँच सकती थी। कौए की नजर घड़े के आसपास पड़े कंकड़ों पर पड़ी और उसके मन में एक विचार आया। उसने कंकड़ों को एक-एक करके घड़े में डालना शुरू किया। काफी मेहनत के बाद पानी ऊपर आ गया, कौए ने जी भरकर पानी पिया और अपनी प्यास बुझाई।

सीख—मेहनत करने वालों को सफलता अवश्य मिलती है।

❑❑

हिन्दी व्याकरण-3

पाठ — 1
भाषा और व्याकरण

मौखिक

1. एक-दूसरे तक संदेश पहुँचाने के माध्यम को भाषा कहते हैं।
2. व्याकरण भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान कराता है।
3. हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी है।

लिखित

1. (क) राम आम खाता है।
(ख) गाड़ी प्लेटफार्म पर है।
(ग) अर्णव खेल रहा है।
(घ) माँ बाजार जा रही है।

2. (क) (iv) तेलुगू
(ख) (ii) पंजाबी
(ग) (i) उड़िया

3. (क) जिस माध्यम के द्वारा हम बोलकर या लिखकर अपने भावों या विचारों को दूसरों तक पहुँचाते हैं, उसे 'भाषा' कहते हैं।
(ख) जो कुछ हम लिखते व पढ़ते हैं उसे लिखित 'भाषा' कहते हैं; जबकि मुख द्वारा बोली व कानों द्वारा सुनी जाने वाली भाषा को हम मौखिक भाषा कहते हैं।
(ग) भाषा की ध्वनियों के लिखने के व्यवस्थित ढंग को 'लिपि' कहते हैं।
(घ) तीन भाषाओं के नाम हैं—हिन्दी, पंजाबी तथा गुजराती।

1. 1. गुजराती 2. बंगाली
3. तमिल 4. हिन्दी

आओ कुछ करें

- जैसा कि आप सभी जानते हैं कि अपने मन के भावों को व्यक्त करने हेतु भाषा की आवश्यकता होती है। इस भाषा को लंबे समय तक स्थायित्व प्रदान करने हेतु हमें लिपि की आवश्यकता हुई। इसकी सफलता पर ही मनुष्य सभ्य कहलाने में सफल हो सका।
- अशुद्ध भाषा का प्रयोग करने से अर्थ का अनर्थ हो जाएगा और हमारी लेखन तथा बोल-चाल की भाषा में भी अशुद्धियों का प्रभाव पड़ेगा और हमारी भाषा रसविहीन हो जाएगी।

पाठ — 2
वर्ण तथा मात्रा

अभ्यास

मौखिक

1. (क) स्वर वर्ण **(ख)** व्यंजन वर्ण

2. स्वर वर्ण।

लिखित

1. अंगूर मंदिर
हँसना पाँच

2. (क) (✓) **(ख)** (×)
(ग) (✓) **(घ)** (×)

3. भ् + आ + र् + अ + त् + अ
भ् + अ + ग् + अ + त् + अ
व् + इ + च् + आ + र् + अ

4. बालक
हाथी

5. (क) वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते 'वर्ण' कहलाती है।
(ख) जिन वर्णों के ऊपर बिन्दु (ं) लगा होता है और जिनका उच्चारण करते समय वायु नाक से बाहर निकलती है उन्हें अनुस्वार कहते हैं; जैसे—हंस, पंख आदि; जबकि जिन वर्णों के ऊपर चन्द्रबिन्दु (ँ) लगा होता है और जिनका उच्चारण करते समय वायु

नाक और मुँह दोनों से निकलती है, उन्हें 'अनुनासिक' कहते हैं; जैसे—आँख, माँ आदि।

आओ कुछ करें

- राम सीख
  खेल फौज
  मृग फूल
- पेड़ दौड़ गुड़ भीड़
  पढ़ चढ़ गढ़ दृढ़

पाठ — 3

शब्द

मौखक

1. (क) सार्थक **(ख)** निरर्थक

1. (क) विकारी शब्द **(ख)** अविकारी शब्द

लिखित

1. गाड़ी मकान चाय शेर
तकड़ी वकान वाय वंगल

2. (क) विकारी (✓) **(ख)** अविकारी (✓)
(ग) अविकारी (✓) **(घ)** विकारी (✓)

3. (क) एक या एक से अधिक वर्णों के मेल से बनी सार्थक ध्वनि शब्द कहलाती है।

(ख) वर्णों के सार्थक मेल से शब्द बनता है; जैसे— ग् + आ + ज् + अ + र + अ = गाजर।

3. जिन शब्दों का कुछ अर्थ होता है उन्हें 'सार्थक' कहते हैं; रोटी, मकान आदि। जबकि जिन शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता है उन्हें 'निरर्थक शब्द' कहते हैं; जैसे—वोटी, वकान आदि।

4. जिन शब्दों का वाक्य में प्रयोग करने पर लिंग, वचन, पुरुष और कारक के कारण रूप बदल जाता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं; जैसे—

— **वह** खेल रहा है। **वे** खेल रहे हैं। जबकि जिन शब्दों का वाक्य में प्रयोग करने पर रूप नहीं बदलता उन्हें 'अविकारी शब्द' कहते हैं; जैसे—

— श्याम **दो घंटे** पढ़ता है।

— **आओ कुछ करें**

बिस्कुट, जलेबी, राजा, संतरा, रईस,

मगर, टमटम, लट्टू, रखवाला, शेर।

पाठ — 4

संज्ञा

मौखिक

1. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को 'संज्ञा' कहते हैं।

2. (क) व्यक्तिवाचक संज्ञा
(ख) जातिवाचक संज्ञा
(ग) भाववाचक संज्ञा

लिखित

1. (क) (ii) व्यक्तिवाचक संज्ञा
(ख) (iii) भाववाचक संज्ञा
(ग) (i) जातिवाचक संज्ञा
(घ) (ii) व्यक्तिवाचक संज्ञा

2. (क) (×) **(ग)** (✓)
(ग) (✓) **(घ)** (×)

3. (क) चीनी, मिठास
(ख) राघव, बाजार
(ग) समुद्र, मछलियाँ
(घ) मीरा
(ङ) बुढ़ापा, व्यक्ति

4. (क) किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं; जैसे—राम, पुस्तक, बुढ़ापा आदि।

(ख) जिन संज्ञा शब्दों से विशेष व्यक्ति, स्थान, वस्तु आदि के नाम का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–सचिन तेंदुलकर, रामायण आदि।

(ग) जिन संज्ञा शब्दों से किसी संपूर्ण जाति या वर्ग के प्राणियों, वस्तुओं या स्थानों का बोध होता है, उन्हें, 'जातिवाचक संज्ञा' कहते हैं; जैसे–गाँव, पुस्तक, सेना आदि।

(घ) वे शब्द जो किसी विशेष स्थिति या दशा, गुण-दोष आदि का बोध कराते हैं; उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–मिठास, बचपन आदि।

आओ कुछ करें

- लकड़ी श्रीरामचरितमानस खुशी
  पुस्तक मोहन मिठास
  मोबाइल ताजमहल लड़कपन
- **1.** अंकिता
  व्यक्तिवाचक
  2. अंगूर
  जातिवाचक

पाठ – 5
लिंग

मौखिक

1. संज्ञा के जिस रूप से उसके स्त्री या पुरुष जाति के होने का पता चलता है, उसे लिंग कहते हैं; जैसे–छात्रा (स्त्रीलिंग), छात्र (पुल्लिंग) आदि।

2. लिंग के दो भेद हैं– पुल्लिंग और स्त्रीलिंग।

लिखित

1.	ग्वालिन	शेरनी
	गायिका	शिष्या
	शिक्षिका	मौसी
2.	अध्यापक	कवि
	मौसा	नाना
	पिता	लड़का
3. (क)	पहाड़	**(ख)** पहाड़ी
	2. पत्ता	**2.** पत्ती

आओ कुछ करें

- गाय चूहा
  बकरी राजा
  मोरनी बालक
- मोर मोरनी
  गाय बैल
  लेखक लेखिका
- **1.** घोड़ी
  2. दादी
  3. लड़कियाँ
  4. अध्यापिका
- **1. माली** फूल तोड़ रहा है।
  2. बैल घास चर रहा है।
  3. शेरनी गुफा के पास बैठी है।
  4. गायिका गीत गा रही है।

पाठ – 6
वचन

मौखिक

1. शब्द के जिस रूप से एक या एक से अधिक वस्तु या व्यक्ति का बोध होता है, उसे 'वचन' कहते हैं।

2. वचन के दो प्रकार हैं–

(क) एकवचन **(ख)** बहुवचन

लिखित

1.	बतख	खिड़की	माला	पत्ता
	मक्खियाँ	रातें	किताबें	लड़के

2.	बेटी	पाठशालाएँ
	घोड़े	केला
	तोता	कहानी
	कबूतर	नदियाँ

3. (क) किसी एक व्यक्ति या वस्तु का बोध कराने वाले शब्दों को 'एकवचन' कहते हैं; जैसे—लड़का, कुर्सी आदि।

(ख) एक से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं का बोध कराने वाले शब्दों को 'बहुवचन' कहते हैं; जैसे—लड़के, कुर्सियाँ आदि।

आओ कुछ करें

• नदी	आक्टोपस	डॉल्फिन
सितारा मछली	आसमान	घड़ी
पेड़	मछलियाँ	कछुए
बतखें	बादल	पहाड़

पाठ — 7
सर्वनाम

मौखिक

1. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्दों को 'सर्वनाम' कहते हैं।

2. सर्वनाम के छ: भेद हैं—

(क) पुरुषवाचक सर्वनाम
(ख) निश्चयवाचक सर्वनाम
(ग) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
(घ) संबंधवाचक सर्वनाम
(च) प्रश्नवाचक सर्वनाम
(छ) निजवाचक सर्वनाम

लिखित

1. (क) हम (✓) **(ख)** तुम (✓)
(ग) हमने (✓) **(घ)** वह (✓)

2. (क) मैं
(ख) कुछ
(ग) तुम, क्या
(घ) वह, स्वयं
(ङ) जो-सो

3. (ख) वह **(ग)** उससे
(घ) उसने **(ङ)** उसे

4. **1.** वहाँ **2.** उन्होंने
3. वह **4.** उसे
5. वह **6.** यह
7. उसका **8.** वे
9. उनको

5. (क) (iv) संबंधवाचक
(ख) (i) अनिश्चयवाचक
(ग) (iv) निश्चयवाचक

आओ कुछ करें

• मैं, तुम, वह, हम	क्या, कौन
वे, यह	स्वयं, खुद, आप
कोई, कुछ	जो-सो

पाठ — 8
विशेषण

मौखिक

1. वे शब्द जो संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।

2. विशेषण के चार भेद हैं।

लिखित

1. रोगी मासिक दैनिक
   श्रद्धालु धार्मिक मौलिक

2. (क) वे शब्द जो संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें 'विशेषण' कहते हैं।
   (ख) वे शब्द जिनसे किसी वस्तु या व्यक्ति की संख्या का बोध होता है, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जबकि जिन शब्दों से किसी संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा अथवा परिमाण का बोध होता है उन्हें परिमाण- वाचक विशेषण कहते हैं।

3. (क) होशियार
   (ख) ठंडा
   (ग) पीले
   (घ) चार
   (घ) लाल

4. सुंदर गुड़िया
   नमकीन चावल
   ऊँची इमारत
   दो मीटर रस्सी

आओ कुछ करें

- 1. भूरी, लंबी, बिल्ली, पूँछ
  2. लंबी, छलाँग

पाठ — 9
क्रिया

मौखिक

1. जिन शब्दों से किसी काम के होने का बोध होता है, उन्हें क्रिया कहते हैं।
2. क्रिया के दो प्रकार हैं—(क) सकर्मक क्रिया (ख) अकर्मक क्रिया।

लिखित

1. (क) बना रही हैं
   (ख) पढ़ रहा है
   (ग) सो रही है

2. खाना चलना
   पढ़ना नाचना
   खरीदना हँसना
   खेलना बैठना

3. (क) जिन शब्दों से किसी काम के करने या होने का बोध होता है, उन्हें क्रिया, कहते हैं; जैसे—पढ़ना, चलना, जाना, सोना आदि।
   (ख) वाक्य में जब क्रिया के साथ कर्म होता है, तब उन्हें 'सकर्मक क्रिया' कहते हैं; जबकि वाक्य में जब क्रिया के साथ कोई कर्म नहीं होता है, तब उन्हें 'अकर्मक क्रिया' कहते हैं।

4. 1. खाता है।
   2. उड़ रही है।
   3. बैठे हैं।
   4. पीता है।

आओ कुछ करें

- सूरज का निकलना माँ का खाना बनाना
  हवा का चलना रामू का टीवी देखना
  रात होना मोहन का दौड़ना
- दौड़ना नाचना लिखना
  गाना खेलना खाना बनाना

पाठ — 10
काल

मौखिक

1. किसी काम के होने के निश्चित समय को काल कहते हैं।
2. वर्तमानकाल, भूतकाल तथा भविष्यत्काल।

लिखित

1. (क) वर्तमानकाल
(ख) भूतकाल
(ग) भविष्यत्काल
(घ) वर्तमान काल

2. (क) भूतकाल
(ख) भविष्यत्काल
(ग) भविष्यत्काल
(घ) वर्तमानकाल
(ङ) भूतकाल

3. (क) क्रिया का वह रूप जिससे किसी काम के करने या होने के समय का बोध होता है, उसे काल कहते हैं; जैसे—राम कानपुर जाता है। (वर्तमानकाल)

(ख) **भूतकाल**—जिस क्रिया के द्वारा किसी कार्य के बीते हुए समय में होने का बोध होता है, उसे भूतकाल कहते हैं; जैसे—रामू जयपुर गया था।

वर्तमानकाल—जिस क्रिया के द्वारा किसी काम के वर्तमान समय में होने का बोध होता है, उसे 'वर्तमानकाल' कहते हैं; जैसे—रामू जयपुर जाता है।

भविष्यत्काल—जिस क्रिया के द्वारा किसी काम के आने वाले समय का बोध होता है, उसे 'भविष्यत्काल' कहते हैं; जैसे—रामू जयपुर जाएगा।

आओ कुछ करें

- छात्र स्वयं करें।

पाठ — 11
विपरीतार्थक शब्द

मौखिक

1. विपरीत अर्थ बताने वाले शब्दों को 'विलोम शब्द' कहते हैं।

2. विपरीत।

लिखित

1.	नास्तिक	अवगुण
	अपकार	बड़ा
	सायं	अशिक्षित
	निराशा	पास

2. (क) पश्चिम
(ख) गरमी
(ग) झूठ
(घ) बाहर

आओ कुछ करें

- **1.** बड़ा — छोटा
  2. लंबा — ठिगना

पाठ — 12
समानार्थी शब्द

मौखिक

1. समान अर्थ बताने वाले शब्दों को समानार्थी शब्द कहते हैं।

2. छात्र।

लिखित

1.	दिन	दिवस	वन	जंगल
	पुत्र	सुत	लक्ष्मी	कमला
	पर्वत	गिरि	आग	अग्नि
2.	सुत	तनय	वाटिका	उपवन
	नौका	बेड़ा	देवराज	सुरेश

3. (क) **भागीरथी** एक पवित्र नदी है।
(ख) इस बल्ब की **रोशनी** बहुत तेज है।
(ग) चंदन के वृक्ष पर **साँप** रहते हैं।
(घ) **सरोवर** में बहुत मछलियाँ हैं।

आओ कुछ करें

- प्रात: काल — सवेरा
  सूर्य — रवि
  चाँद — मयंक

पाठ — 13
अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

मौखिक

1. भाषा को सरल, रोचक व प्रभावशाली बनाने के लिए।

2. कम-से-कम शब्दों का प्रयोग।

लिखित

1. (1) कुम्हार
(2) डॉक्टर/चिकित्सक
(3) निडर
(4) परिश्रमी
(5) दैनिक
(6) लेखक
(7) सदाचारी
(8) गायक
(9) आलसी
(10) सर्वप्रिय

2. (1) दूसरों पर उपकार करने वाला
(2) वर्ष में होने वाला
(3) विद्या ग्रहण करने वाला
(4) जो देखने योग्य हो
(5) छूत से फैलने वाला
(6) दूसरों का हित चाहने वाला
(7) सप्ताह में एक बार होने वाला
(8) जो खेती करता हो

आओ कुछ करें

- एक बार एक कौआ प्यासा था। उसने एक **पानी से भरा एक बरतन** देखा। **वह मिट्टी के बरतन के पास गया। मिट्टी के बरतन में** थोड़ा पानी था। कौए ने उस **मिट्टी के बरतन** में कंकड डालने शुरू किया। जब **मिट्टी के बरतन** में पानी ऊपर आ गया तब कौए ने पानी पिया और अपनी प्यास बुझाई।

  संक्षेप में कहानी—एक बार एक कौआ प्यासा था। उसने एक घड़ा देखा। घड़े में थोड़ा पानी था। कौए ने उस घड़े में कंकड़ डालने शुरू किए। जब घड़े का पानी ऊपर आ गया तब कौए ने पानी पिया और अपनी प्यास बुझाई।

- रामकरन = आर.के.
  मोहनलाल = एम.एल.
  अनुज शर्मा = एन. एस.
  नेहा चौधरी = एन.सी.

पाठ — 14
मुहावरे

मौखिक

1. मुहावरों का अर्थ भाषा को आकर्षक और प्रभावशाली बनाने के लिए किया जाता है।

2. ऐसे वाक्यांश जो शाब्दिक अर्थ न देकर विशिष्ट अर्थ को प्रकट करते हैं; 'मुहावरे' कहलाते हैं।

लिखित

- **1.** आरंभ करना
  राहुल अपनी दुकान का श्रीगणेश आगामी पाँच तारीख को करेगा।

2. बहुत प्यारा
मोहन अपने माँ-बाप की आँखों का तारा है।

3. हरा देना
भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सेना के छक्के छुड़ा दिए।

4. शर्मिंदा होना
ग्रामप्रधान मजदूरों से पैसे लेने और धोखाधड़ी में पकड़ा गया तो वह पानी-पानी हो गया।

5. घबरा जाना
परीक्षा में प्रश्न-पत्र को देखकर अशोक को नानी याद आ गयी।

आओ कुछ करें

- आँख दिखाना अँगूठा दिखाना नाक में दम करना हाथ खड़े करना
  उल्लू बनाना ईद का चाँद होना

पाठ — 15
पत्र–लेखन

- राजीव नगर,
  तिलक कालोनी, बीकानेर
  दिनांक : 20/10/20....
  पूज्य चाचाजी,
  चरण स्पर्श
  मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ और आशा करता हूँ कि आप भी सकुशल होंगे। चाचाजी मैंने अपने विद्यालय की कंप्यूटर कक्षा में अपना दाखिला करवा लिया है। कम्प्यूटर के शिक्षक बहुत ही अच्छी तरह से कम्प्यूटर के बारे में बताते हैं। वास्तव में कम्प्यूटर एक लाभदायक यंत्र है।
  चाचाजी को चरण-स्पर्श, चाचाजी और छोटे भाई को मेरा प्यार।
  आपका बेटा
  अरविंद

पाठ — 16
कहानी लेखन

नोट— छात्र पाठ में दी गई कहानियों को पढ़ें तथा कहानी पढ़ने और लिखने का अभ्यास करें।

पाठ — 17
अपठित गद्यांश

1. यात्री रात गुजारने के लिए धर्मशाला में गया।
2. यात्री द्वारा धर्मशाला का दरवाजा खटखटाने पर चौकीदार ने जवाब दिया कि दरवाजे का ताला केवल चाँदी की चाबी से खुलता है।
3. चौकीदार की बात का मतबल था—पैसे देने पर दरवाजा खुलेगा।
4. हमें यात्री हाजिरजवाब आदमी लगा।
5. मुसाफिर-**यात्री**, इंतज़ाम-**व्यवस्था**

पाठ — 18
अनुच्छेद–लेखन

नोट— छात्र पाठ में दिए गए अनुच्छेदों को पढ़ें तथा शिक्षक महोदय की सहायता में अनुच्छेद लेखन का अभ्यास करें।

प्रश्न पत्र–1

(क) 1. (iii) गुजराती
2. (iv) उड़िया
3. (ii) व्यक्तिवाचक
4. (i) स्त्रीलिंग
5. (ii) पुल्लिंग

(ख) 1. वे शब्द जो संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।
2. वे सर्वनाम शब्द जिनसे किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध होता है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम' कहते हैं; जैसे— वे, इसे आदि। जबकि वे सर्वनाम शब्द जिनसे किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध नहीं होता, उन्हें 'अनिश्चयवाचक सर्वनाम' कहते हैं; जैसे—कोई, कुछ आदि।

3. एक से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं का बोध कराने वाले शब्दों को बहुवचन कहते हैं। जैसे—लड़के, कुर्सियाँ आदि।
4. संज्ञा के जिस रूप से उनके स्त्री या पुरुष जाति के होने का पता चलता है उसे लिंग कहते हैं। जैसे—छात्रा (स्त्रीलिंग), छात्र (पुल्लिंग) आदि।
5. जिस संज्ञा शब्दों से किसी संपूर्ण जाति या वर्ग के प्राणियों, वस्तुओं या स्थानों का बोध होता है, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—गाँव, पुस्तक, संज्ञा आदि।

प्रश्न पत्र–2

(क) 1. खा रहा है
2. उड़ रही हैं
3. खेल रहे हैं

(ख) 1. वर्तमान काल
2. भूतकाल
3. भूतकाल

(ग)

नास्तिक	अवगुण
उपकार	बड़ा

(घ)

दिवस	सरिता
पहाड़	नीर

(ङ) बहुत प्यारा

(च) बीमार होने पर अवकाश हेतु प्रधानाध्यापक जी को प्रार्थना-पत्र

परीक्षा भवन
सांगानेर
दिनांक 17/8/20....

श्रीमान प्रधानाध्यापक महोदय,
जवाहर विद्यालय, सांगानेर
विषय—अवकाश प्राप्ति हेतु

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मुझे कल सायंकाल से तीव्रज्वर हो गया है। इसलिए मैं स्कूल नहीं आ सकता। डॉक्टर ने तीन-चार दिन तक आराम करने की सलाह दी है। अत: मुझे तीन दिन का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
विनीत अग्रवाल
कक्षा .....
दिनांक .....

(छ) प्रदूषण एक समस्या

प्रदूषण का शाब्दिक अर्थ है—वायुमंडल या वातावरण का दूषित होना। आज हम जिस तरह के वातावरण में जी रहे हैं वह पूरी तरह प्रदूषित हो चुका है और प्रदूषण आज दिनोंदिन बढ़ता ही जा रहा है। प्रदूषण की समस्या ने आज सारे विश्व के सामने विकराल रूप धारण कर रखा है। ये प्रदूषण चार प्रकार का होता है— वायु-प्रदूषण, जल-प्रदूषण, ध्वनि-प्रदूषण तथा भूमि-प्रदूषण। वायु-प्रदूषण के लिए औद्योगीकरण, सड़कों पर चलने वाले वाहन आदि उत्तरदायी हैं। इनकी गैसों के कारण साँस और फेफड़ों की बीमारियाँ आम हो गयी हैं। जल-प्रदूषण भी एक विकट समस्या है। कारखानों का दूषित जल, अपशिष्ट रसायन-कचरा आदि नदी-तालाबों में डालना, मल-मूत्र डालना, शवों का बहाना आदि तरह-तरह की बीमारियों का कारण है। ध्वनि-प्रदूषण भी नगरों और महानगरों में मनुष्य के जीवन को तनावपूर्ण बनाए रखने का प्रमुख कारण है। इससे हृदयरोग तथा रक्तचाप जैसी बीमारियों का जन्म होता है। भूमि-प्रदूषण भी आज के वैज्ञानिक युग की देन है। तरह-तरह की रासायनिक खादें डालने से भूमि की उर्वराशक्ति नष्ट होने के साथ अधिक उपज लेने के कारण कई तरह की बीमारियों का जन्म हो रहा है। अत: हम सबके संयुक्त प्रयास से ही इस समस्या को सुलझाया जा सकता है।

❑❑

हिन्दी व्याकरण-4

पाठ — 1
भाषा और व्याकरण

मौखिक

1. हिन्दी।

2. किसी सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा को 'बोली' कहते हैं।

लिखित

1. (क) (×) **(ख)** (✓)

(ग) (×) **(घ)** (×)

2. (क) जिस साधन के द्वारा हम अपने मन के भावों या विचारों को बोलकर तथा लिखकर दूसरों के सामने प्रकट करते हैं; उसे भाषा कहते हैं; जैसे—भाषण देना, पत्र लिखना आदि।

(ख) हम जो कुछ मुख के द्वारा बोलते हैं और कानों द्वारा सुनते हैं, उसे मौखिक भाषा कहते हैं; जैसे—भाषण देना। जबकि अपने मन के भावों को लिखकर प्रकट करना या लिखित रूप में पढ़कर समझना, 'लिखित भाषा' कहलाती है; जैसे—पत्र लिखना।

(ग) भाषा की ध्वनियों के लिखने का ढंग लिपि कहलाता है; जैसे—देवनागरी, रोमन आदि।

(घ) जिस विषय के अध्ययन से भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान होता है उसे 'व्याकरण' कहते हैं। इसके तीन भेद हैं—1. वर्ण-विचार, 2. शब्द-विचार तथा 3. वाक्य-विचार।

3. (क) भाषा

(ख) पत्र-लेखन

(ग) दो

(घ) देवनागरी

आओ कुछ करें

- हिन्दी — फ्रेंच
  ओड़िया — अंग्रेजी
  गुजराती — चीनी
  कश्मीरी
- हिन्दी
- देवनागरी
- हिंदी
- 14 सितंबर
- छात्र स्वयं करें।

पाठ — 2
वर्ण विचार

मौखिक

1. भाषा की वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके और खंड नहीं किए जा सकते, 'वर्ण' कहलाती है।

2. वर्ण के तीन भेद होते हैं।

3. जिन ध्वनियों का उच्चारण करते समय अन्य किसी ध्वनि की सहायता नहीं लेनी पड़ती, उन्हे 'स्वर' कहते हैं।

लिखित

1. (क) (✓) **(ख)** (✓)

(ग) (×) **(घ)** (✓)

2. (क) जवाहर **(ख)** नाम

(ग) ताजमहल **(घ)** भारत

3. (क) **स्वर वर्ण**

(i) स्वर वर्ण के उच्चारण में व्यंजनों की सहायता नहीं लेनी पड़ती।

(ii) स्वरों की संख्या ग्यारह होती है।

(iii) स्वरों की मात्राएँ होती हैं।

व्यंजन वर्ण

(i) व्यंजनों के उच्चारण में स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है।

(ii) व्यंजनों की संख्या तैतीस होती है।

(iii) व्यंजनों की मात्राएँ नहीं होतीं।

(ख) अनुस्वार का उच्चारण करते समय वायु नाक से बाहर निकलती है। इसे वर्ण में बिंदु (ं) के रूप में लगाते हैं; जैसे–गंगा, मंदिर आदि। जबकि अनुनासिक का उच्चारण करते समय वायु नाक और मुँह दोनों से निकलती है। इसे वर्ण में चंद्रबिंदु (ँ) के रूप में लगाते हैं; जैसे–ऊँट, चाँद आदि।

(ग) जिन ध्वनियों का उच्चारण करते समय स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है, उन्हें 'व्यंजन' कहते हैं। इन्हें तीन भागों में बाँटा गया है।

स्पर्श व्यंजन–जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ को कंठ, तालु, मूर्धा, दाँत या होंठ को स्पर्श करना पड़ता है, उन्हें **स्पर्श व्यंजन** कहते हैं। इनकी संख्या 25 है; इन्हें पाँच वर्गों में विभाजित किया गया है–

वर्ग का नाम	**व्यंजन**
क वर्ग	क ख ग घ ङ
च वर्ग	च छ ज झ ञ
ट वर्ग	ट ठ ड ढ ण
त वर्ग	त थ द ध न
प वर्ग	प फ ब भ म

अंत:स्थ व्यंजन–जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ मुख के किसी भाग को बहुत हल्का-सा स्पर्श करती है, उन्हें **अंत:स्थ व्यंजन** कहते हैं। **य**, **र**, **ल** तथा **व** संख्या में **4** अंत:स्थ व्यंजन हैं।

ऊष्म व्यंजन–जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय हवा के मुख से रगड़ खाने से गर्मी पैदा होती है, उन्हें **ऊष्म व्यंजन** कहते हैं। **श**, **ष**, **स** तथा **ह** संख्या में **4** ऊष्म व्यंजन हैं।

(घ) **ह्रस्व स्वर**–वे स्वर जिन्हें बोलने में कम समय लगता है, उन्हें 'ह्रस्व स्वर' कहते हैं।

दीर्घ स्वर–वे स्वर जिन्हें बोलने में अधिक समय लगता है, उन्हें 'दीर्घ स्वर' कहते हैं।

4.

अं, अ:	अयोगवाह
य, र, ल, व	अंत:स्थ व्यंजन
श, ष, स, ह	ऊष्म व्यंजन
क्ष, त्र, ज्ञ, श्र	संयुक्त व्यंजन

5.

गणना	हिरण
लड़का	घड़ी
गढ़ना	चढ़ना

6.

कक्ष	क्षत्रिय
त्रिशूल	चित्र
ज्ञान	विज्ञान
श्रमिक	परिश्रम

आओ कुछ करें

- अ आ ई उ ऊ
  ख ग घ च छ ज ट ठ त द न प
  फ ब म य र व ह
  अं

पाठ — 3
शब्द विचार

मौखिक

1. एक या एक से अधिक ध्वनियों या वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं।

2. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के चार भेद होते हैं–**तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी।**

3. अर्थ के आधार पर शब्दों के दो भेद होते हैं–सार्थक, निरर्थक।

4. प्रयोग के आधार पर शब्दों के दो भेद हैं विकारी तथा अविकारी।

लिखित

1. (क) (✓) **(ख)** (×) **(ग)** (✓) **(घ)** (×)

2. (क) एक या एक से अधिक ध्वनियों के सार्थक मेल को 'शब्द' कहते हैं; जैसे–क् + इ + त् + आ + ब् + अ = किताब।

(ख) **शब्दों का वर्गीकरण**–शब्दों का निम्नलिखित आधार पर वर्गीकरण किया गया है–

उत्पत्ति के आधार पर–उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के चार भेद हैं।

1. **तत्सम शब्द**–पुत्र, अग्नि आदि।
2. **तद्भव शब्द**–पूत, आग आदि।
3. **देशज शब्द**–खिड़की, गाड़ी आदि।

4. **विदेशी शब्द**—डॉक्टर, तौलिया आदि।

अर्थ के आधार पर—अर्थ के आधार पर सार्थक शब्दों के चार भेद हैं—

1. **समानार्थी शब्द**—कमल-पंकज, नीरज, जलज आदि।
2. **विपरीतार्थी शब्द**—अच्छा-बुरा आदि।
3. **एकार्थी शब्द**—बोतल, किवाड़ आदि।
4. **अनेकार्थी शब्द**—कनक-सोना, धतूरा आदि।

3. **तत्सम शब्द—**

घृत	कार्य	अग्नि	कर्ण	पत्र
कर्म	दुग्ध	ग्राम	मुख	वर्ष

तद्भव शब्द—

घी	सूरज	माया	गाँव
कान	काम		

4. **(क)** घोड़ागाड़ी
(ख) चिड़ियाघर
(ग) मकान
(घ) अकेला
(ङ) तालाब

आओ कुछ करें

- सूर्य (तत्सम शब्द); घर (तद्भव शब्द); डिबिया (देशज शब्द); बेटा, लड़की, खाना (विकारी शब्द); ऊपर (अविकारी शब्द); कनक (अनेकार्थी शब्द), दशानन (योगरूढ़ शब्द); डॉक्टर, स्कूल, तौलिया, जमीन, कसम, परदा (विदेशी शब्द) टी. वी. (एकार्थी शब्द)।
- इमली मक्खन
  टमटम मटर

पाठ — 4
संज्ञा

मौखिक

(क) किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, जाति, स्थिति अथवा भाव के नाम को 'संज्ञा' कहते हैं।

(ख) संज्ञा के तीन मुख्य भेद हैं—**व्यक्तिवाचक, जातिवाचक** और **भाववाचक।**

लिखित

1. **(क)** दिल्ली महात्मागांधी, लालकिला, रामायण, गीता, श्री देवी
   (ख) राजधानी, पशु, पर्वत
   (ग) बुढ़ापा, प्रसन्नता, मूर्खता
2. **(क)** जातिवाचक संज्ञा
   (ख) व्यक्तिवाचक संज्ञा
   (ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा
   (घ) भाववाचक संज्ञा
3. **(क)** **व्यक्तिवाचक संज्ञा**—जिस शब्द के द्वारा किसी विशेष प्राणी, वस्तु अथवा स्थान का बोध हो, उसे **व्यक्तिवाचक संज्ञा** कहते हैं; जैसे—दिल्ली, सचिन, श्रीरामचरितमानस आदि।

   (ख) **जातिवाचक संज्ञा**—जिस संज्ञा शब्द के द्वारा किसी वस्तु या व्यक्ति की संपूर्ण जाति या वर्ग का बोध होता है, उसे **जातिवाचक संज्ञा** कहते हैं; जैसे—पुस्तक, नदी, पशु आदि।

   (ग) **भाववाचक संज्ञा**—जिस शब्द से किसी के गुण, दोष, स्थिति अथवा अवस्था का बोध हो, उसे **भाववाचक संज्ञा** कहते हैं; जैसे—बचपन, खुशी, बुढ़ापा, वीरता आदि।
4. दासता
   देवत्व
   भाईचारा
   बुढ़ापा
   सेवा
5. कंजूसी
   भूख
   मोटापा
   प्यास
   गरीबी
   चौड़ाई

आओ कुछ करें

- हिरन
  बुढ़ापा

आगरा	चुहिया
ताजमहल	शेर
लालकिला	राह

पाठ — 5
लिंग

मौखिक

1. लिंग के दो भेद हैं—स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग।

2. छात्र स्वयं करें।

लिखित

1.

ऊँटनी	मालिन
वीरांगना	कवयित्री
सम्राज्ञी	तपस्विनी
पड़ोसन	शिक्षिका
गुणवती	बुद्धिमती
कुम्हारिन	बंदरिया

2.

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
स्त्रीलिंग	स्त्रीलिंग
पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
स्त्रीलिंग	पुल्लिंग

3. (क) शब्द के जिस रूप से पुरुष या स्त्री जाति के होने का पता चलता है, उसे लिंग कहते हैं; जैसे—

पुरुष जाति में—बैल, शेर आदि।

स्त्री जाति में—गाय, शेरनी आदि।

(ख) **पुल्लिंग**—पुरुष-जाति (नर वर्ग) के होने का बोध कराने वाले शब्दों को **पुल्लिंग** कहते हैं; जैसे—बैल, अध्यापक, शेर आदि।

स्त्रीलिंग—स्त्री जाति (मादा वर्ग) का बोध कराने वाले शब्दों को स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे— गाय, अध्यापिका, शेरनी आदि।

3. सदैव स्त्रीलिंग तथा सदैव पुल्लिंग रहने वाले शब्दों के उदाहरण निम्नलिखित हैं—

सदैव स्त्रीलिंग शब्द—भाषाओं के नाम—हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू।

झीलों के नाम—डल, वूलर, चिलका।

तिथियों के नाम—प्रथमा, द्वितीया, तृतीया।

सदैव पुल्लिंग शब्द—दिनों के नाम—रविवार, सोमवार, मंगलवार।

पहाड़ों के नाम—नीलगिरि, हिमालय, सतपुड़ा।

महीनों के नाम—जनवरी, फरवरी, मार्च।

4. (क) शाम **(ख)** माता

(ग) चील **(घ)** आवाज़

(ङ) कक्षा

5. (क) मेरी मित्र बहुत अच्छी **लेखिका** है।

(ख) रोज सुबह **मालिन** फूल चुनकर लाती है।

(ग) मैं बड़ा होकर अच्छा **लेखक** बनूँगा।

आओ कुछ करें

- छात्र स्वयं करें।
- छात्र स्वयं करें।

पाठ — 6
वचन

मौखिक

1. जिन शब्दों से व्यक्ति या वस्तु के एक या एक से अधिक संख्या में होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं।

2. शब्द के जिस रूप से वस्तु या प्राणी के एक होने का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं।

3. शब्द के जिस रूप से वस्तु या प्राणी के एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं।

लिखित

(क) 1. लड़कियों **2.** बहनों

3. बच्चे **4.** फूलों

5. महिलाएँ **6.** मिठाइयाँ

7. कपड़े **8.** कहानियाँ

(ख) 1. शब्द के जिस रूप से वस्तु या व्यक्ति के एक या अनेक होने का बोध हो, उसे 'वचन' कहते हैं; जैसे—

एक के लिए (एकवचन)—बकरी, बच्चा, मछली आदि।

अनेक के लिए (बहुवचन)—बकरियाँ, बच्चे, मछलियाँ आदि।

2. शब्द के जिस रूप से किसी प्राणी या वस्तु के होने का बोध हो, उसे 'एकवचन' कहते हैं; जैसे—कौआ, केला आदि। जबकि शब्द के जिस रूप से किसी प्राणी या वस्तु के अनेक होने का बोध हो, उसे—'बहुवचन' कहते हैं; जैसे—कौए, केले आदि।

3. 1. बच्चे गुब्बारे खरीद रहे हैं।

2. टोकरियों में सेब रखे हैं।

3. सड़क पर गाड़ियाँ जा रही हैं।

4. पौधे उग रहे हैं।

5. फूलों पर तितलियाँ बैठी हैं।

आओ कुछ करें

- चूहा — चूहे
  नदी — नदियाँ
  कली — कलियाँ
  टहनी — टहनियाँ
  बकरी — बकरियाँ
  तितली — तितलियाँ
  दिशा — दिशाएँ
- महिला — तोते
  बकरी — पुस्तकें
  चिड़िया — चिड़ियाँ
  सेब — ताले
  गुलाब — लड़के
  कुत्ता — शाखाएँ
  बंदर
  पेड़
- किताब — किताबों
- छात्र स्वयं करें।

पाठ — 7
कारक

मौखिक

1. संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उसके संबंध का बोध होता है, उसे कारक कहते हैं।

2. कारक के आठ भेद हैं—कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण और संबोधन।

लिखित

1. (क) ने को **(ख)** ने को

(ग) पर **(घ)** ने के लिए

(ङ) के द्वारा

1. (क) हिरण **को** शेर **ने** मारा।

(ख) पेड़ **से** पत्ते गिरते हैं।

(ग) छात्रा कलम **से** लिख रही है।

3. (क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया करने वाले का बोध होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं; जैसे—राम ने पुस्तक खरीदी।

(ख) जिस संज्ञा की सहायता से किसी कार्य को समाप्त किया जाता है, उसे करण कारक कहते हैं; जैसे—वह कलम से पत्र लिख रही है।

आओ कुछ करें

- ने
  को
  से, के द्वारा
  के लिए
  से (अलग)
  का की के
  में, पर
  हे, अरे!

पाठ — 8
सर्वनाम

मौखिक

1. जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें **सर्वनाम** कहते हैं।
2. सर्वनाम का प्रयोग वाक्य को सुंदर और सरल बनाने के लिए किया जाता है।

(ग) सर्वनाम के छः भेद हैं।

लिखित

1. (क) ये **(ख)** कुछ
(ग) कब **(घ)** वह

1. (क) निश्चयवाचक सर्वनाम
(ख) पुरुषवाचक सर्वनाम
(ग) पुरुषवाचक सर्वनाम
(घ) संबंधवाचक सर्वनाम
(ङ) अनिश्चयवाचक सर्वनाम

3. (क) जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं उन्हें 'सर्वनाम' कहते हैं, जैसे—मैं, तुम, वह आदि।

(ख) सर्वनाम के निम्नलिखित छः भेद होते हैं—
1. पुरुषवाचक सर्वनाम
2. निश्चयवाचक सर्वनाम
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
4. संबंधवाचक सर्वनाम
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम
6. निजवाचक सर्वनाम

(ग) **पुरुषवाचक सर्वनाम**—वे सर्वनाम शब्द जो सुनने वाले, बोलने वाले या अन्य किसी व्यक्ति के लिए प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें **पुरुषवाचक सर्वनाम** कहते हैं; जैसे—मैं, तुम, वह आदि।

(घ) वे सर्वनाम शब्द जो किसी निश्चित व्यक्ति का वस्तु का बोध कराते हैं, उन्हें 'निश्चयवाचक सर्वनाम' कहते हैं, जैसे—**यह** मेरी गुड़िया है। जबकि जिस सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध नहीं होता है उन्हें 'अनिश्चयवाचक सर्वनाम' कहते हैं, जैसे—ललिता ने **किसी** की मदद की।

4.

अक्षत और गीता	वे
अक्षत और गीता के	उनके
अक्षत और गीता को	उनको
अक्षत और गीता के	उनके
अक्षत और गीता को	तुमको
अक्षत और गीता	आप

आओ कुछ करें

- **उसका** भाई डॉक्टर है।
  अपना काम करने में कोई बुराई नहीं है।
  मेरा पेन **किसने** लिया है?
  हमारा देश आज भी सोने की चिड़िया है।
- हम स्वयं अपने लिए जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करते हैं, वे हैं—स्वयं, खुद, आप, अपने आप, स्वयं की आदि।

पाठ — 9
विशेषण

मौखिक

1. विशेषण शब्दों से जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती है, उन्हें **विशेष्य** कहते हैं।
2. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को **विशेषण** कहते हैं।
3. विशेषण के चार भेद हैं—**गुणवाचक**, **संख्यावाचक**, **परिमाणवाचक** तथा **सार्वनामिक**।

लिखित

1.

शैक्षिक	दैनिक
नैतिक	घरेलू

2. (क) राधिका **सुन्दर** कपड़े पहने हुए हैं।
(ख) तुम सबको **नया** साल मुबारक हो।

3. (क) नीली
(ख) ताज़ा
(ग) मोटा

4. (क) संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं जबकि जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती है, उन्हें 'विशेष्य' कहते हैं।

(ख) जो सर्वनाम शब्द संज्ञा के स्थान पर बोले जाते हैं उन्हें सर्वनाम कहते हैं; जबकि जो सर्वनाम शब्द संज्ञा से पहले या बाद में विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं उन्हें **सार्वनामिक** या **संकेतवाचक विशेषण** कहते हैं।

उदाहरण—सर्वनाम	**सार्वनामिक विशेषण**
वह होशियार है।	**वह** बालक होशियार है।

(ग) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, काल, आकार तथा स्थिति आदि से संबंधित विशेषता बताते हैं, उन्हें 'गुणवाचक विशेषण' कहते हैं; जैसे—पतला आदमी, मूर्ख बंदर आदि।

5.

ताकतवर	सफेद	लाल
चालाक	ठंडी	गरम

आओ कुछ करें

- मेरा अच्छा विद्यालय है।
  मेरा सच्चा मित्र है।
  मेरी प्यारी माँ है।

पाठ — 10
क्रिया

मौखिक

1. क्रिया के दो प्रकार हैं।

2. क्रिया के रूप में परिवर्तन लिंग तथा वचन के कारण होता है।

लिखित

1.

खाना	सोना
काटना	उठना
लिखना	बैठना
पढ़ना	हँसना
पीना	जागना

2. (क) अकर्मक **(ख)** विकारी
(ग) पुल्लिंग **(घ)** एकवचन

3. (क) रोना **(ख)** सोना
(ग) खाना **(घ)** हँसना
(ङ) पढ़ना

4.

रोना	पढ़ना	लिखना
हँसना	खाना	नाचना
पीना	खेलना	

5. (क) जिस शब्द से किसी कार्य का करना या होना प्रकट हो, उसे **क्रिया** कहते हैं।

(ख) **सकर्मक क्रिया**—जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म भी होता है, वह **सकर्मक क्रिया** कहलाती है। जैसे—मोहन दूध पीता है।

इस वाक्य में **क्या** से प्रश्न करने पर उत्तर **दूध** मिलता है। इस उत्तर को **कर्म** और इस क्रिया को **सकर्मक क्रिया** कहते हैं।

(ग) **अकर्मक क्रिया**—जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म नहीं होता, उसे **अकर्मक क्रिया** कहते हैं। जैसे—

1. शालिनी हँसती है। 2. घोड़ा भागता है।

इन वाक्यों में **क्या** से प्रश्न करने पर कोई उत्तर नहीं मिलता है। इन क्रियाओं को अकर्मक क्रिया कहते हैं।

6.

हो गया	चमक रहा था	दिख रहा था
चहचहा रही थीं	बुलाने गया	खेलने लगे

7. (क) जाऊँगा **(ख)** खेले
(ग) खिले हैं **(घ)** सुनी

आओ कुछ करें

- **1.** सकर्मक क्रिया
  2. अकर्मक क्रिया
  3. सकर्मक क्रिया
  4. अकर्मक क्रिया
  5. सकर्मक क्रिया

पाठ — 11
काल

मौखिक

1. क्रिया के जिस रूप से उसके होने या करने के समय का बोध होता है, उसे **काल** कहते हैं।
1. काल के तीन भेद हैं—**भूतकाल, वर्तमानकाल** और **भविष्यत्काल।**

लिखित

1. (क) भूतकाल **(ख)** भूतकाल
(ग) वर्तमानकाल **(घ)** भविष्यत्काल
(ङ) वर्तमानकाल

2. (क) चल रहे समय में कार्य के होने का बोध कराने वाली क्रिया को 'वर्तमानकाल' कहते हैं; जैसे—बच्चा रो रहा है।

इस वाक्य में 'रो रहा है' क्रिया में चल रहे समय का बोध हो रहा है, इसलिए यह क्रिया वर्तमानकाल में है।

(ख) बीते हुए समय में कार्य के होने का बोध कराने वाली क्रिया को 'भूतकाल' कहते हैं; जैसे—ट्रेन जा चुकी थी।

इस वाक्य में 'जा चुकी थी' से कार्य के बीते हुए समय का बोध हो रहा है, इसलिए यह क्रिया भूतकाल में है।

(ग) आने वाले समय में कार्य के होने का बोध कराने वाली क्रिया को 'भविष्यत्काल' कहते हैं; जैसे—निधि गीत गाएगी। इस वाक्य में 'गाएगी' से कार्य के आने वाले समय में होने का बोध हो रहा है, इसलिए यह क्रिया भविष्यत्काल में है।

आओ कुछ करें

- **1.** मैंने गाना गाया।
  2. मैं बाजार जाता हूँ।
  3. मैं दिल्ली जाऊँगा।
  4. राम दिल्ली गया।
  5. वह खाना बनाता है।
  6. गीता मैच देखेगी।
  7. बच्चे स्कूल जा रहे हैं।
  8. मोहन तैयार हो रहा था।
- छात्र स्वयं करें।
-

दौड़ा	दौड़ता	दौड़ेगा
बेचा	बेचता	बेचेगा
खरीदा	खरीदता	खरीदेगा
गया	जाता	जाएगा
नहाया	नहाता	नहाएगा
बजाया	बजाता	बजाएगा

पाठ — 12
विराम–चिह्न

मौखिक

1. लिखते समय विराम दर्शाने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें 'विराम चिह्न' कहते हैं।
2. अपनी बात को कहने या ठीक ढंग से समझाने के लिए 'विराम-चिह्न' का प्रयोग किया जाता है।

लिखित

1. (क) । **(ख)** !
(ग) ? **(घ)** ,।

2. (क) लिखते समय भाव के स्पष्टीकरण हेतु थोड़ा रुकने को 'विराम स्थिति' कहते हैं, इसे 'विराम-चिह्न' द्वारा दर्शाया जाता है।

(ख) लिखते समय विराम स्थिति को दर्शाने वाले चिह्नों को विराम चिह्न कहते हैं; जैसे—सीता गाती है।

इस वाक्य में वाक्य के पूर्ण होने की स्थिति को दर्शाने हेतु पूर्ण विराम (1) का प्रयोग हुआ है।

(ग)

विराम-चिह्नों के नाम	**विराम-चिह्न**
1. पूर्ण विराम	।
2. अल्प विराम	,
3. विस्मयसूचक चिह्न	!
4. प्रश्नवाचक	?

3.

1.	पूर्ण विराम	(iv) ।
2.	अल्प विराम	(ii) ,
3.	विस्मयसूचक चिह्न	(i) !
4.	प्रश्नवाचक चिह्न	(iii) ?

आओ कुछ करें

- आप कहाँ रहते हैं?

रविवार, सोमवार और मंगलवार आदि सप्ताह के दिन हैं।
आकाश पढ़ता है।
वाह! क्या बात है।

पाठ — 13
विलोम शब्द

मौखिक

1. एक-दूसरे का विपरीत अर्थ बनाने वाले शब्दों को 'विलोम शब्द' कहते हैं।
2. अन्य नाम 'विपरीतार्थक शब्द' हैं।

लिखित

1. **(क)** अधर्म
   (ख) अपमान
   (ग) मृत्यु
   (घ) दुर्जन
   (ङ) रंक
2. **(क)** बिक्री **(ख)** पाताल
   (ग) कोमल **(घ)** परतंत्र
   (ङ) मृत्यु **(च)** जहर
   (छ) अनुत्साह **(ज)** अनादर

(ग)

धर्म	अधर्म	शोक	अशोक
मोल	अनमोल	आदर	अनादर
पुत्र	कुपुत्र	रूप	कुरूप

(घ)
1. निरुत्साह
2. निरादर
3. अधर्म
4. अमीर
5. व्यय
6. कोमल
7. अवगुण
8. दुर्गंध

(ङ)
1. मूर्ख
2. अनुपस्थित
3. उत्तर
4. गलत

आओ कुछ करें

- मित्र, गुण, संग
  अपना, धर्म, निशा
  अमृत, सत्य, ऊपर
  आदर, आय

मित्र	शत्रु	आदर	अनादर
गुण	अवगुण	अमृत	विष
अपना	पराया	संग	कुसंग
सत्य	असत्य	निशा	दिन
धर्म	अधर्म	आय	व्यय

पाठ — 14
पर्यायवाची शब्द

मौखिक

1. एकसमान अर्थ बताने वाले शब्दों को 'पर्यायवाची शब्द' कहते हैं।
2. पर्यायवाची को अन्य 'समानार्थी शब्द' के नाम से जानते हैं।

लिखित

1. **(क)** वस्त्र
   (ख) शिव
   (ग) जलधि
2. विनायक, गजानन, गणपति
   सुता, तनया, बेटी
3. ज्योति, प्रकाश
   अश्व, घोड़ा
   दामिनी, बिजली
   आसमान, नभ

आओ कुछ करें

- नयन, नेत्र
  नीर, पानी
  नभ, अंबर
- गाय, धेनु, आम
  रसाल, घर, सदन

पाठ — 15
अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

मौखिक

1. अनेक शब्दों के लिए 'एक शब्द' का अर्थ है- शब्द समूह के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग करना, जो शब्द समूह का अर्थ स्पष्ट कर दे।
2. भाषा का सौंदर्य बढ़ाने के लिए अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग किया जाता है।

लिखित

1. (क) (✓) **(ख)** (✓)
(ग) (×) **(घ)** (×)

2. तेज बुद्धि वाला
जो रोगी की चिकित्सा करे
जिसकी पत्नी मर गई हो
दया करने वाला
घृणा के योग्य

3.

आकाश को चूमने वाला	गगनचुंबी
बहुत मेहनत करने वाला	परिश्रमी
मीठा बोलने वाला	मृदुभाषी
विदेशों को माल भेजना	निर्यात
जो मिल न सके	अलभ्य

4. (क) गांधीजी **अद्‌वितीय** हैं।
(ख) ये शीशा **पारदर्शी** नहीं है।
(ग) रामू **बेसहारा** है।
(घ) राधा **विधवा** है।

आओ कुछ करें

- **1.** दैनिक
  2. प्राप्तांक
  3. विद्‌यार्थी
  4. अध्यापक

पाठ — 16
मुहावरे

मौखिक

1. सामान्य अर्थ को छोड़कर, विशेष अर्थ का बोध कराने वाले वाक्यांश **मुहावरे** कहलाते हैं।
2. मुहावरों के प्रयोग से भाषा अधिक प्रभावशाली व अर्थपूर्ण हो जाती है।

लिखित

1. (क) (✓) **(ख)** (×)
(ग) (✓) **(घ)** (×)

2. (क) मन को शांति मिलना
जब तक रामू अपने अपमान का बदला नहीं ले लेता तब तक उसका कलेजा ठंडा नहीं होगा।
(ख) अपनी इच्छा अनुसार चलाना
मालिक अपने नौकर को दिनभर अंगुली पर नचाता है।
(ग) मृत्यु की परवाह न करना
साहसी बालक ने जान-हथेली पर रखकर डूबती हुई महिला को बचाया।
(घ) धोखा देना
हमारे देश के नेता शुरू से ही जनता की आँखों में धूल झोंकते आए हैं।
(ङ) नाराज होना
अध्यापक के डाँटने पर आँखें नीली-पीली नहीं करनी चाहिए, बल्कि उनकी बातों पर गौर करना चाहिए।

3. (क) मूर्ख
(ख) संदेह होना
(ग) मृत्यु की परवाह न करना
(घ) क्रोध को भड़काना

4.

इधर-उधर की हाँकना	गप्पें मारना
खून खौलना	जोश में आना
चार-चाँद लगाना	शोभा बढ़ाना
रंग उड़ना	घबरा जाना
कमर टूटना	हिम्मत टूट जाना
खून-पसीना एक करना	कड़ी मेहनत करना

आओ कुछ करें

- छात्र स्वयं करें।

पाठ — 17
पत्र–लेखन

मौखिक

1. दूर बैठे प्रियजनों को संदेश भेजने के लिए पत्र-लेखन का व्यवहार किया जाता है।
2. पत्र दो प्रकार के होते हैं—औपचारिक और अनौपचारिक।
3. अनौपचारिक-पत्र।

लिखित

- **1.** (✓) **2.** (✓)
  3. (✓) **4.** (×)

आओ कुछ करें

- प्रियदर्शनी नगर, बाड़मेर
  दिनांक 27/8/20....

प्रिय गौरांग

सस्नेह

मैं सकुशल हूँ और तुम्हारी कुशलता की ईश्वर से कामना करता हूँ। कल पिताजी का पत्र मिला। मुझे तुम्हारी गलत संगति के बारे में जानकर दु:ख हुआ। याद रखिए! समय अमूल्य है। यदि तुमने इसे बरबाद किया तो यह तुम्हें बरबाद कर देगा। अत: समय का सदुपयोग कीजिए।

आशा है, मेरी बातों का चिंतन करते हुए तुम समय के महत्व को समझोगे।

तुम्हारा बड़ा भाई

सुयश

पाठ — 18
कहानी–लेखन

मौखिक

1. पाठक को प्रभावित करने वाली संदेश युक्त रचना को कहानी कहते हैं।
2. हमें नानी-दादी कहानी सुनाते हैं।
3. हमें परियों की, पशु-पक्षियों की, राजा-रानी की कहानी अच्छी लगती है।
4. हमें मुसीबत के समय बुद्धि के काम लेना चाहिए, क्योंकि बुद्धि बल से श्रेष्ठ होती है।

लिखित

1. (क) (✓) **(ख)** (×)
(ग) (×) **(घ)** (×)

2. किसी जंगल में कबूतरों का एक समूह रहता था। एक दिन एक शिकारी उस जंगल में आया। शिकारी ने कबूतरों के समूह को देखकर अपना जाल बिछाया और उसमें कुछ दाने डाल दिये।

कबूतर दाने देखकर उन्हें खाने के लिए नीचे आ गए और शिकारी के जाल में फँस गए। कबूतरों ने जाल से निकलने के लिए खूब प्रयत्न किया, किन्तु उनके सभी प्रयास असफल हो गए।

उन कबूतरों में एक वृद्ध कबूतर भी था, जो सबसे अनुभवी था। उसने सभी कबूतरों से कहा—''यदि तुम लोग अपने प्राण बचाना चाहते हो तो मेरी सलाह मानो। हम सब मिलकर जाल उड़ा ले चलते हैं।'' सभी कबूतर उस वृद्ध कबूतर की सलाह मानकर जाल को उड़ा ले गए।

उसी जंगल में कबूतरों का मित्र चूहा रहता था। कबूतर चूहे के बिल के पास जाल सहित उतर गए। चूहे ने अपने साथियों को बुलाकर जाल काट दिया और कबूतरों को आजाद कर दिया। शिकारी कबूतरों की एकता को देखकर हाथ मलता रह गया।

शिक्षा—एकता में बल होता है।

3. चूहों में आपस में बड़ी मित्रता थी। लेकिन वहाँ एक बिल्ली ने आतंक मचा रखा था। बेचारे चूहे अपने किसी साथी को खोना नहीं चाहते थे। एक दिन उन्होंने बिल्ली के भय से निजात पाने के लिए एक योजना बनाई।

चूहों ने बिल्ली के आने के रास्ते में अंदर ही अंदर जमीन में गहरा गड्ढा कर दिया। अब जैसे ही बिल्ली चूहों को

पकड़ने के लिए आगे बढ़ी वैसे ही वह उस गड्ढे में जा गिरी। लाख कोशिशों के बाद जब बिल्ली गड्ढे से न निकल सकी तो वह चूहों से मदद के लिए गिड़गिडाने लगी और चूहों को कभी नुकसान न पहुँचाने की कसम खाई। चूहों को उस बिल्ली पर दया आ गई, उन्होंने बिल्ली को बाहर निकाल लिया और सब मिल-जुलकर रहने लगे।

शिक्षा—बुद्धि बल से श्रेष्ठ है।

आओ कुछ करें

- छात्र स्वयं करें।

पाठ — 19
अपठित गद्यांश

1. रमज़ान के महीने के बात चाँद दिखाई देने के अगले दिन ईद का त्योहार मनाया जाता है।
2. रमजान के महीने की सबसे खास बात यह है कि मुसलमान भाइयों के लिए यह महीना सबसे पवित्र माना जाता है। वे इस पूरे महीने रोज़ा रखते हैं।
3. रोज़े समाप्त होने के बाद दिखाई देने वाला चाँद 'ईद का चाँद' कहलाता है।
4. ईद की नमाज़ ईदगाह में पढ़ी जाती है।
5. हमीद भाई, आजकल ईद का चाँद हो रहे हो, नज़र नहीं आते।

पाठ — 20
अनुच्छेद-लेखन

नोट— छात्र पाठ में दिए गए अनुच्छेदों को पढ़कर अनुच्छेद लेखन का अभ्यास करें।

प्रश्न-पत्र : 1

1. (क) (✓) **(ख)** (✓)
(ग) (✗) **(घ)** (✓)
(ङ) (✗)

2.

अम्मा	घड़ा	काठ
घर	चोंच	धुआँ
घी	आगे	काम
उल्लू	घोड़ा	आग
कंगन	चाँदनी	

3.

यौवन	नारीत्व
मित्रता	बुढ़ापा
भक्ति	पुरुषत्व
घरेलू	प्रभुत्व

4. (क) **पुल्लिंग**—पुरुष-जाति (नर वर्ग) के होने का बोध कराने वाले शब्दों को **पुल्लिंग** कहते हैं; जैसे—बैल, अध्यापक, शेर आदि।

स्त्रीलिंग—स्त्री-जाति (मादा वर्ग) के होने का बोध कराने वाले शब्दों को **स्त्रीलिंग** कहते हैं; जैसे—गाय, अध्यापिका, शेरनी आदि।

(ख) शब्द के जिस रूप से वस्तु या व्यक्ति के एक या अनेक होने का बोध हो, उसे 'वचन' कहते हैं;
जैसे—एक के लिए (एकवचन)—बकरी, बच्चा, मछली आदि। अनेक के लिए (बहुवचन)—बकरियाँ, बच्चे, मछलियाँ आदि।

(ग) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया करने वाले का बोध होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं जैसे—राम ने पुस्तक खरीदी।

(घ) सर्वनाम शब्द निम्नलिखित छः प्रकार के होते हैं—
1. पुरुषवाचक सर्वनाम 2. निश्चयवाचक सर्वनाम 3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम 4. संबंधवाचक सर्वनाम 5. प्रश्नवाचक सर्वनाम 6. निजवाचक सर्वनाम।

प्रश्न–पत्र : 2

1. (क) (i) रोना

(ख) (iii) अपमान

(ग) (ii) रंक

(घ) (ii) शिव

(ङ) (i) जलधि

2. (क) ! ?

(ख) ?

(ग) , ,

(घ) ।

3. मित्र को उपहार भेजने हेतु धन्यवाद-पत्र।

राज कॉलोनी, सीकर (राज.)

दिनांक–06/02/20--

प्रिय मित्र नरेन्द्र,

नमस्कार।

यहाँ हम सभी कुशलपूर्वक हैं, आशा करते हैं आप भी अपने परिवार के साथ सकुशल होंगे। मित्र! कल तुम्हारा भेजा हुआ कोरियर प्राप्त हुआ। बड़ी प्रसन्नता हुई कि तुमने मेरे जन्मदिन पर अत्यन्त उपयोगी भेंट घड़ी भेजी है।

भेंट पाकर मुझे बड़ी खुशी हुई। यह घड़ी हमेशा समय के लिए मुझे पाबंद रखेगी और तुम्हारी याद दिलाती रहेगी।

चाचा-चाची को मेरा सादर प्रणाम तथा अरविंद को ढेर सारा प्यार।

तुम्हारा मित्र

सुशील कुमार

4. मेरा प्रिय मित्र

दीपेश मेरा प्रिय मित्र है। हम दोनों एक ही विद्यालय में तथा एक ही कक्षा में पढ़ते हैं। वह आठ वर्ष का है। उसके माता-पिता अध्यापक हैं। वह अपने शिक्षकों तथा बड़ों का बहुत सम्मान करता है। वह पढ़ने में बहुत होशियार है। वह कक्षा में हमेशा प्रथम आता है। पढ़ाई के साथ-साथ वह खेलों में भी रुचि रखता है। सभी बच्चे व अध्यापक उसे पसंद करते हैं। वह बहुत बुद्धिमान व हँसमुख है। प्रत्येक प्रतियोगिता में वह हमेशा प्रथम आता है। वह विद्यालय के प्रत्येक नियम का पालन करता है। पढ़ाई में वह सदैव मेरी मदद करता है। मैं अपने मित्र से बहुत प्रेम करता हूँ। मुझे अपने मित्र पर गर्व है।

❑❑

हिन्दी व्याकरण-5

पाठ — 1
भाषा और व्याकरण

मौखिक

1. अपने भावों और विचारों को बोलकर, पढ़कर या लिखकर प्रकट करने के माध्यम को भाषा कहते हैं।

2. (i) मौखिक भाषा (ii) लिखित भाषा (iii) सांकेतिक भाषा

3. व्याकरण के तीन भेद हैं—(i) वर्ण-विचार (ii) शब्द-विचार (iii) वाक्य-विचार।

4. शुद्ध पढ़ने, लिखने और बोलने के लिए व्याकरण पढ़ना आवश्यक है।

लिखित

1. (क) मौखिक **(ख)** बोली
(ग) राजभाषा **(घ)** देवनागरी

2.

संस्कृत	मलयालम
मैथिली	उड़िया
तमिल	तेलुगू
असमिया	बांग्ला
पंजाबी	मराठी
हिन्दी	

3.

देवनागरी	फारसी	रोमन
देवनागरी	देवनागरी	गुरुमुखी

4. (क) (✓) **(ख)** (×)
(ग) (×) **(घ)** (✓)
(ङ) (✓)

5. (क) जिस माध्यम से मनुष्य अपने भावों और विचारों को प्रकट करता है और दूसरे के विचारों को समझता है, उसे **भाषा** कहा जाता है।

भाषा के तीन प्रकार हैं—(1) लिखित (2) मौखिक (3) सांकेतिक।

(ख) जब एक सीमित क्षेत्र में भाषा के अनेक स्थानीय रूप विकसित हो जाते हैं, तो उसे बोली कहते हैं। जैसे—राजस्थानी, मैथिली, मारवाड़ी।

(ग) किसी भी भाषा के लिखने की विधि को **लिपि** कहा जाता है। जैसे—हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है।

(घ) जो शास्त्र हमें वर्णों, शब्दों और वाक्यों के शुद्ध प्रयोग की जानकारी देता है, उसे व्याकरण कहते हैं। व्याकरण के तीन भेद हैं— (1) वर्ण-विचार (2) शब्द विचार (3) वाक्य-विचार।

आओ कुछ करें

- छात्र स्वयं करें।
-

	भाषा	देश
1.	हिन्दी	भारत
2.	चीनी	चीन
3.	फ्रेंच	फ्रांस
4.	स्पेनी	स्पेन
5.	पुर्तगाली	पुर्तगाल
6.	जापानीज	जापान
7.	इटालियन	इटली
8.	इंडोनेशियन	इंडोनेशिया
9.	अंग्रेजी	ब्रिटेन
10.	अरबी	अरब देश

- छात्र स्वयं करें।
- **1.** हिन्दी **2.** मलयालम
3. तेलुगू **4.** गुजराती
5. पंजाबी

पाठ — 2
वर्ण–विचार

मौखिक

1. स्वर और व्यंजन

2. अ रहित व्यंजन को लिखने के लिए

लिखित

1. (क) (✓) (ख) (✓)
   (ग) (✓) (घ) (×)
   (ङ) (✓)
2. (क) अ (ख) 52
   (ग) ङ, ढ़ (घ) अं, अः
3. (क) शब्द का सबसे छोटा खंड, जिसके और खंड न हो सकें, उसे **वर्ण** कहते हैं। जैसे—क्, ख्, ग् आदि।
   (ख) किसी भाषा के वर्णों का निश्चित और क्रमबद्ध समूह वर्णमाला कहलाता है। हिन्दी वर्णमाला में कुल 52 वर्ण हैं।
   (ग) जिन वर्णों का उच्चारण बिना किसी अन्य वर्ण की सहायता से होता है; उन्हें स्वर कहते हैं।
   ह्रस्व स्वर—जिन स्वरों के उच्चारण में कम-से-कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। जैसे—अ, इ, उ, और ऋ।
   दीर्घ स्वर—जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों की अपेक्षा अधिक समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। जैसे—आ, ई, ऊ आदि।
   (घ) जिनके उच्चारण में स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है; उन्हें व्यंजन कहते हैं। **भेद**—1. स्पर्श व्यंजन, 2. अंत:स्थ व्यंजन, 3. ऊष्म व्यंजन।

आओ कुछ करें

- चंद वंश कंस
  मंच बंद
- क्षमा ज्ञानी त्रिलोक श्रमदान
  बच्चा पक्का कच्चा धक्का
- हंस सरोवर में तैर रहा है।
- बालक हँस रहा है।

पाठ — 3
वर्ण-संयोग

मौखिक

1. व्यंजन में स्वर को मात्रा के रूप में जोड़ना **वर्ण-संयोग** कहलाता है।
2. **र्** में स्वर नहीं होने पर यह अपने से आगे वाले व्यंजन के ऊपर चला जाता है और इसका (र्‍) हो जाता है। **र्** का यह रूप **रेफ** कहलाता है; जैसे—
   क् + अ + र् + म् + अ = कर्म
   ध् + अ + र् + म् + अ = धर्म
3. 'क' वर्ग, 'च' वर्ग, 'ट' वर्ग, 'त' वर्ग तथा 'प' वर्ग के पाँचवें अक्षर (वर्ण) को पंचमाक्षर कहते हैं।

लिखित

1. (क) (✓) (ख) (✓)
   (ग) (✓) (घ) (✓)
2. (क) ख्‍ + य ख्याति
   (ख) ग्‍ + य अग्य
   (ग) ध्‍ + य ध्यान
   (घ) ल्‍ + ब बल्ब
3. (क) — कमल, चमक
   (ख) ि नियम, शिव
   (ग) ी गीता, झील
   (घ) ृ गृह, मृदा
4. (क) स्वर का व्यंजनों का योग विशेष चिह्न या मात्राओं द्वारा होता है। जैसे—क् + अ + म् + अ + ल् + अ = कमल
   (ख) जब व्यंजन को व्यंजन से मिलाते हैं, तो इनके बीच स्वरों का लोप हो जाता है। इन व्यंजनों को आधा लिखा जाता है; जैसे—भाग्य, कल्प आदि।

आओ कुछ करें

- पंकज गन्ना
  वर्ण-संयोग-व्यंजन में स्वर को मात्रा के रूप में जोड़ना वर्ण संयोग कहलाता है।

पाठ — 4
शब्द-विचार

मौखिक

1. अर्थ के आधार पर शब्द के चार भेद हैं—
   1. समानार्थी शब्द 2. विपरीतार्थी शब्द
   3. एकार्थी शब्द 4. अनेकार्थी शब्द

समानार्थी शब्द–वे शब्द जिनके अर्थों में समानता होती है, **समानार्थी शब्द** कहलाते हैं; जैसे–

हवा–वायु, समीर, पवन

आग–अग्नि, ज्वाला, अनल।

विपरीतार्थी शब्द–वे शब्द जो अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से एक-दूसरे के विपरीत होते हैं, उन्हें **विपरीतार्थी शब्द** कहते हैं। जैसे–उलटा-सीधा, ऊपर-नीचे, अनुकूल-प्रतिकूल, सत्य-असत्य आदि।

एकार्थी शब्द–वे शब्द जिनका अपना एक ही अर्थ होता है, **एकार्थी शब्द** कहलाते हैं; जैसे–सोफा, बाल्टी, स्वेटर, टी. वी., चित्र, पेड़, सूर्य आदि।

अनेकार्थी शब्द–वे शब्द जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं, **अनेकार्थी शब्द** कहलाते हैं; जैसे–

गुरु–एक ग्रह, शिक्षक, श्रेष्ठ

काल–यमराज, मृत्यु, समय।

2. रचना के आधार पर शब्दों को तीन भागों में बाँटा गया है–

1. रूढ़ शब्द 2. यौगिक शब्द
3. योगरूढ़ शब्द

3. उत्पत्ति के आधार पर शब्द के चार भेद हैं–

1. तत्सम शब्द 2. तद्भव शब्द
3. देशज शब्द 4.विदेशी शब्द

4. प्रयोग के आधार पर शब्दों को दो भागों में बाँटा गया है–

1. विकारी शब्द 2. अविकारी शब्द

लिखित

1. (क) (✓) **(ख)** (✓)
(ग) (×) **(घ)** (✓)
(ङ) (✓)

2.

चर्म	आठ	छटपटाना	तोप
उच्च	ऊँचा	सटकना	आसमान
कृषक	आम	खिचड़ी	कॉलेज
घृणा	लकड़ी	कान	रिश्वत
सर्प			

3. (क) वह वर्ण-समूह जिसका कोई सार्थक अर्थ होता है, उसे **शब्द** कहते हैं।

हिंदी भाषा में शब्द के चार भेद हैं–

1. अर्थ के आधार पर शब्द
2. रचना के आधार पर शब्द
3. उत्पत्ति के आधार पर शब्द
4. प्रयोग के आधार पर शब्द

(ख) अर्थ के आधार पर शब्द के चार भेद हैं–

1. समानार्थी शब्द 2. विपरीतार्थी शब्द
3. एकार्थी शब्द 4. अनेकार्थी शब्द

समानार्थी शब्द–वे शब्द जिनके अर्थों में समानता होती है, **समानार्थी शब्द** कहलाते हैं; जैसे–

हवा–वायु, समीर, पवन

आग–अग्नि, ज्वाला, अनल।

विपरीतार्थी शब्द–वे शब्द जो अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से एक-दूसरे के विपरीत होते हैं, उन्हें **विपरीतार्थी शब्द** कहते हैं। जैसे–उलटा-सीधा, ऊपर-नीचे, अनुकूल-प्रतिकूल, सत्य-असत्य आदि।

एकार्थी शब्द–वे शब्द जिनका अपना एक ही अर्थ होता है, **एकार्थी शब्द** कहलाते हैं; जैसे–सोफा, बाल्टी, स्वेटर, टी. वी., चित्र, पेड़, सूर्य आदि।

अनेकार्थी शब्द–वे शब्द जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं, **अनेकार्थी शब्द** कहलाते हैं; जैसे–

गुरु–एक ग्रह, शिक्षक, श्रेष्ठ

काल–यमराज, मृत्यु, समय।

(ग) रूढ़ शब्द–वे शब्द जो अन्य शब्दों के मेल से नहीं बनते और जिनके खंडों का कोई अर्थ नहीं होता है, **रूढ़ शब्द** कहलाते हैं; जैसे–दवात, किताब, सूर्य, गुण, कठिन, घोड़ा आदि।

यौगिक शब्द–वे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बनते हैं और जिनके खंडों का अर्थ होता है, यौगिक शब्द कहलाते हैं; जैसे–विद्यालय–विद्या + आलय,

भाग्योदय–भाग्य + उदय।

(घ) विकारी शब्द–वे शब्द जो वाक्य में प्रयोग करने पर लिंग, वचन और कारक के अनुसार परिवर्तित हो जाते हैं, **विकारी शब्द** कहलाते हैं; जैसे–बच्चा, मैं, सुंदर, खाया आदि। ये चार प्रकार के हैं–

1. संज्ञा 2. सर्वनाम
3. विशेषण 4. क्रिया

अविकारी शब्द—वे शब्द जिनका वाक्यों में प्रयोग करने पर लिंग, वचन और कारक के अनुसार परिवर्तन नहीं होता, **अविकारी शब्द** कहलाते हैं; जैसे—के पास, आज, कल, के बिना, परंतु, किंतु ओह!, अरे! आदि। ये चार प्रकार के हैं—

1. क्रिया विशेषण
2. समुच्चय बोधक
3. संबंधबोधक
4. विस्मयादिबोधक

(ङ) तत्सम शब्द—संस्कृत के उन शब्दों को जिन्हें हिंदी में बिना किसी परिवर्तन के उनके मूलरूप में प्रयोग किया जाता है, **तत्सम शब्द** कहते हैं; जैसे—अग्नि, कृषक, शिक्षा, भिक्षा आदि।

तद्भव शब्द—संस्कृत के जिन शब्दों को परिवर्तित करके हिंदी में प्रयोग किया जाता है, उन्हें **तद्भव शब्द** कहते हैं; जैसे—आग, किसान, सीख, भीख आदि।

4.

इज़्ज़त	अचार	स्कूल	तोप
गमला	डॉक्टर	तमंचा	फ़कीर

5.

पुस्तक	विद्यालय	लंबोदर	
मोर	नील कमल	लंकेश	
कलम	महात्मा	परमात्मा	हिमालय

आओ कुछ करें

- संगणक यंत्र, विद्यालय, ध्वनि ग्रहण यंत्र, दूरभाष
- हिरन, घोड़ा
  ऊँट, हाथी
  बिल्ली, जिराफ
  कुत्ता, शेर
  गाय, बकरी

पाठ — 5
संज्ञा

मौखिक

1. वे शब्द जिनके द्वारा किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, जाति या भाव के नाम का बोध हो, उन्हें **संज्ञा** कहते हैं।

2. संज्ञा के तीन भेद हैं—
1. व्यक्तिवाचक संज्ञा
2. जातिवाचक संज्ञा
3. भाववाचक संज्ञा

लिखित

1. (क) (✓) **(ख)** (✓)
(ग) (×) **(घ)** (×)
(ङ) (✓)

2. (क) स्व **(ख)** काला
(ग) कठोर **(घ)** मारना
(ङ) भूलना **(च)** अनेक

3.

नदी	सचिन तेंदुलकर	सुंदरता	सेना	सोना
चोर	दिल्ली		कक्षा	पत्थर
मोर	कबीरदास		पुस्तकालय	यमुना
	वाराणसी			
	सेब			

4. (क) संज्ञा के तीन भेद हैं—
1. व्यक्तिवाचक संज्ञा
2. जातिवाचक संज्ञा
3. भाववाचक संज्ञा

व्यक्तिवाचक संज्ञा—जिन संज्ञा शब्दों से किसी विशेष प्राणी, वस्तु या स्थान आदि के नाम का बोध होता है, उन्हें **व्यक्तिवाचक संज्ञा** कहते हैं; जैसे—महात्मा गांधी, गीता, श्रीरामचरितमानस, अक्षरधाम मंदिर आदि।

जातिवाचक संज्ञा—जिन संज्ञा शब्दों से एक ही जाति या वर्ग के सभी प्राणियों, वस्तुओं अथवा स्थानों के नाम का बोध हो, उन्हें **जातिवाचक संज्ञा** कहते हैं; जैसे—घर, विद्यालय, पहाड़, पक्षी आदि।

भाववाचक संज्ञा—जिन संज्ञा शब्दों से किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण, दोष, अवस्था, भाव आदि का बोध होता है, उन्हें **भाववाचक संज्ञा** कहते हैं; जैसे—आदर, वीरता, त्याग, आलस्य, प्रेम, बुढ़ापा, घृणा, सुंदरता, पढ़ाई, खेल, मित्रता, शत्रुता आदि।

(ख) जातिवाचक और व्यक्तिवाचक संज्ञा में अंतर—व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा को एक विशेष नाम दिए जाने से बनती है; जैसे—

जातिवाचक संज्ञा	व्यक्तिवाचक संज्ञा
पुस्तक	महाभारत, गीता, रामायण आदि
व्यक्ति	लक्ष्मीबाई, शिवाजी, कृष्ण, अर्जुन, शिव आदि।
नदी	यमुना, गंगा, कावेरी, सिंधु आदि।

देश	भारत, अमेरिका, श्रीलंका, चीन आदि।
स्थान	मथुरा, हैदराबाद, दिल्ली, इलाहाबाद आदि।

(ग) पदार्थवाचक संज्ञा—जिन संज्ञा शब्दों से किसी पदार्थ का बोध होता है, उन्हें **पदार्थवाचक संज्ञा** कहते हैं; जैसे—सोना, चाँदी, पत्थर, लकड़ी, दूध आदि।

समूहवाचक संज्ञा—जिन संज्ञा शब्दों से किसी प्राणी या वस्तु के समूह या समुदाय का बोध होता है, उन्हें **समूहवाचक संज्ञा** कहते हैं; जैसे—सेना, कक्षा, परिवार, पुस्तकालय, भीड़ आदि।

(घ) भाववाचक संज्ञा—जिन संज्ञा शब्दों से किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण, दोष, अवस्था, भाव आदि का बोध होता है, उन्हें **भाववाचक संज्ञा** कहते हैं; जैसे—आदर, वीरता, त्याग, आलस्य, प्रेम, बुढ़ापा, घृणा, सुंदरता, पढ़ाई, खेल, मित्रता, शत्रुता आदि।

आओ कुछ करें

- शिक्षक मोहित पढ़ाई पुस्तकालय ईंट
  छात्र रीना प्रार्थना कक्षा पत्थर
- यमुना नरेन्द्र मोदी रामायण
  अमिताभ बच्चन ऐश्वर्या राय दिल्ली
  आम गुलाब पीपल

पाठ — 6
लिंग

मौखिक

1. संज्ञा शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष अथवा स्त्रीजाति के होने का बोध हो, उसे **लिंग** कहते हैं।

2. हिन्दी भाषा में लिंग के दो भेद हैं—

1. पुल्लिंग **2.** स्त्रीलिंग

3. संज्ञा शब्द के जिस रूप से पुरुष-जाति के होने का बोध हो, उसे पुल्लिंग कहते हैं।

4. संज्ञा शब्द के जिस रूप से स्त्री-जाति के होने का बोध हो, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।

लिखित

1. (क) (×) **(ख)** (×)
(ग) (✓) **(घ)** (✓)
(ङ) (✓)

2. (क) पड़ोसिन **(ख)** शिष्या
(ग) सिंहनी **(घ)** हंसिनी
(ङ) नौकरानी (च) गुड़िया

3. (क) स्त्रीलिंग—वे शब्द जिनसे स्त्री जाति के होने का बोध होता है, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे—छात्रा, गायिका, सेविका, धोती, नाव, झील आदि।

पुल्लिंग—वे शब्द जिनसे पुरुष-जाति के होने का बोध होता है, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं; जैसे—आम, सुनार, मंदिर, कमरा, बालक, चश्मा, माली आदि।

(ख)
- 'अ' और 'आ' ध्वनि से समाप्त होने वाली संज्ञाएँ प्रायः पुल्लिंग होती हैं; जैसे—पर्वत, चावल, लोक, दिखावा, पैसा, परदा, गुस्सा आदि।
- कुछ देशों के नाम सदैव पुल्लिंग रहते हैं; जैसे—भारत, जापान, आस्ट्रेलिया, नेपाल, चीन आदि।
- बोलियों, भाषाओं और लिपियों के नाम सदैव स्त्रीलिंग रहते हैं; जैसे—अवधी, हिंदी, अंग्रेज़ी, देवनागरी, गुरुमुखी, ब्रज आदि।
- नक्षत्रों और तिथियों के नाम प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे—प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चित्रा, रोहिणी आदि।

(ग) पुल्लिंग शब्दों के अंत में ई लगाकर—

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
दास	दासी
घोड़ा	घोड़ी

पुल्लिंग शब्दों के अंत में नी लगाकर—

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
मोर	मोरनी
शेर	शेरनी

आओ कुछ करें

- छात्र स्वयं करें।
- देवेश पिताजी कविता बुआ
  सोमेश चाचाजी देवांशी बहिन
  दीनदयाल दादाजी ममता दादीजी
- छात्र स्वयं करें।

पाठ — 7
वचन

मौखिक

1. जिन शब्दों से किसी वस्तु या व्यक्ति की संख्या का बोध होता है, उन्हें **वचन** कहते हैं।

2. हिंदी व्याकरण में वचन के दो भेद हैं—

1. एकवचन 2. बहुवचन

लिखित

1. (क) चिड़िया उड़ रही है।

(ख) बच्चा खेल रहा है।

(ग) गायें घास चर रही हैं।

(घ) मोहन घर चला गया है।

(ङ) श्याम पुस्तक पढ़ रहा है।

2. (क) (✓) **(ख)** (✓)

(ग) (×) **(घ)** (✓)

(ङ) (×)

3. (क) चिड़ियाँ **(ख)** पहाड़ियाँ

(ग) कुटी **(घ)** लताएँ

(ङ) बहन **(च)** संतानें

(छ) पुस्तक **(ज)** आँखें

4. (क) जिन शब्दों से किसी वस्तु या व्यक्ति की संख्या का बोध होता है, उन्हें **वचन** कहते हैं।

एक **तितली** उड़ रही है।

तीन **तितलियाँ** उड़ रही हैं।

एक **कुत्ता** भाग रहा है।

चार **कुत्ते** भाग रहे हैं।

ऊपर दिए गए वाक्यों में **तितली** और **कुत्ता** शब्द संख्या में एक होने का तथा **तितलियाँ** और **कुत्ते** शब्द संख्या में एक से अधिक होने का बोध करा रहे हैं।

(ख) हिंदी व्याकरण में वचन के दो भेद हैं—

1. एकवचन 2. बहुवचन

(ग) **एकवचन**—किसी व्यक्ति या वस्तु के संख्या में एक होने का बोध कराने वाले शब्द **एकवचन** कहलाते हैं; जैसे—बंदर, लड़की, गाय, घोड़ा आदि।

बहुवचन—किसी व्यक्ति या वस्तु के संख्या में एक से अधिक होने का बोध कराने वाले शब्द **बहुवचन** कहलाते हैं; जैसे—बँदरियाँ, लड़कियाँ, गायें, घोड़े आदि।

(घ) 1. एकवचन स्त्रीलिंग शब्दों के अंतिम **या** को **याँ** में बदलकर।

2. एकवचन पुल्लिंग शब्दों के अंत में **आ** को **ए** में बदलकर।

आओ कुछ करें

- ब्लैक बोर्ड खिड़की दरवाजा डस्टर
  पुस्तकें मेजें कुर्सियाँ छात्राएँ
- खिलौना आम पत्ता गेंद
  केले बल्ले किताबें धातुएँ

पाठ — 8
कारक

मौखिक

1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ इनका संबंध पता चलता है, उसे **कारक** कहते हैं।

2. कारक के आठ प्रकार हैं—

1. कर्ता कारक — ने

2. कर्म कारक — को

3. करण कारक — से, के द्वारा

4. संप्रदान कारक — के लिए, को

5. अपादान कारक — से (अलग होना)

6. संबंध कारक — का, के, की, रा, रे, री

7. अधिकरण कारक — में, पर

8. संबोधन कारक — हे! अरे! ओह!

लिखित

1. (क) (✓) **(ख)** (×)

(ग) (✓) **(घ)** (×)

(ङ) (×)

2. (क) की **(ख)** में

(ग) पर **(घ)** की

3. (क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ इनका संबंध पता चलता है, उसे **कारक** कहते हैं।

कारक के आठ प्रकार हैं–

1. कर्ता कारक – ने
2. कर्म कारक – को
3. करण कारक – से, के द्वारा
4. संप्रदान कारक – के लिए, को
5. अपादान कारक – से (अलग होना)
6. संबंध कारक – का, के, की, रा, रे, री
7. अधिकरण कारक – में, पर
8. संबोधन कारक – हे! अरे! ओह!

(ख) **कर्म कारक**–जिस शब्द पर कर्ता द्वारा किए जाने वाले कार्य का प्रभाव पड़ता है, उसे **कर्म कारक** कहते हैं। इसका परसर्ग **को** है; जैसे–

1. रोहन **बाजार** जा रहा है।

2. कल्पना ने **गाय** को रोटी खिलाई।

उपर्युक्त वाक्यों में बाजार और गाय कर्म कारक हैं। पहले वाक्य में कोई परसर्ग नहीं है, जबकि दूसरे वाक्य में को परसर्ग है।

अत: कर्म कारक को परसर्ग सहित तथा बिना परसर्ग के भी प्रयोग किया जाता है।

(ग) **अपादान कारक**–जिन शब्दों से किसी वस्तु या व्यक्ति का अलग होना पाया जाए, उसे **अपादान कारक** कहते हैं। इसका परसर्ग **से** है; जैसे–

1. पेड़ **से** पत्ते गिरते हैं।
2. वह छत **से** गिर पड़ा।

संबंध कारक–जो शब्द वाक्य में आए अन्य शब्दों से संबंध बताते हैं, उन्हें **संबंध कारक** कहते हैं। इसके परसर्ग **का, के, की** तथा **रा, री, रे** हैं।

1. यह पेन रुचि **का** है।
2. वे हमा**रे** कक्षाध्यापक हैं।

4. छात्र श्यामपट्ट से पढ़ रहे हैं।
माँ छत पर बैठी है।
कृतिका स्कूल के लिए जा रही है।
पेड़ से पत्ते गिर रहे हैं।

से	पर	के लिए	से
करण कारक	अधिकरण	संप्रदान	अपादान

आओ कुछ करें

- छात्र स्वयं करें।

पाठ – 9
सर्वनाम

मौखिक

1. सबका नाम।
2. संज्ञा के स्थान पर
3. तीन भेद होते हैं।

लिखित

1. (क) (✓) **(ख)** (×)
(ग) (×) **(घ)** (✓)
(ङ) (✓)

2.

उसके	उसकी	वह
वह	वह	वह
उसके		

3. (क) वह **(ख)** कुछ
(ग) जो, वह **(घ)** वह
(ङ) मैं

4. (क) जिन शब्दों का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर होता है, उन्हें **सर्वनाम** कहते हैं।

सर्वनाम के छः भेद हैं–

1. पुरुषवाचक सर्वनाम
2. निश्चयवाचक सर्वनाम
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
4. प्रश्नवाचक सर्वनाम
5. निजवाचक सर्वनाम
6. संबंधवाचक सर्वनाम

(ख) **पुरुषवाचक सर्वनाम**–सर्वनाम का जो रूप वक्ता, श्रोता तथा अन्य किसी व्यक्ति का बोध कराता है, उसे **पुरुषवाचक सर्वनाम** कहते हैं; जैसे–

मैं स्कूल जा रहा हूँ। **तुम** अंदर जाओ।
वह क्रिकेट खेलने जा रहा है।

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं–

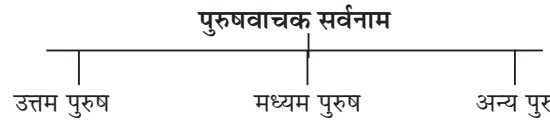

(ग) संबंधवाचक सर्वनाम—वे सर्वनाम शब्द जो वाक्य में किसी दूसरे सर्वनाम से संबंध प्रकट करते हैं, उन्हें **संबंधवाचक सर्वनाम** कहते हैं; जैसे-सो, जैसा-वैसा, जिसकी-उसकी आदि।

जैसी करनी, **वैसी** भरनी।

जिसे तुम चाहो, **उसे** बुला लो।

ऊपर दिए गए उदाहरणों में **जैसी-वैसी, जिसे-उसे** आदि ऐसे शब्द हैं, जिनसे सर्वनामों के मध्य संबंध प्रकट हो रहा है, इन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं।

(घ) प्रश्नवाचक सर्वनाम—जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, उन्हें **प्रश्नवाचक सर्वनाम** कहते हैं; जैसे—कौन, क्या, किसने, किसे, किससे आदि।

परदे के पीछे **कौन** बैठा है?

तुम्हारे पिताजी का **क्या** नाम है?

मेरा खिलौना **किसने** तोड़ा?

उपर्युक्त वाक्यों में **कौन**, **क्या**, **किसने** सर्वनाम शब्द, प्रश्न पूछने के लिए प्रयुक्त हुए हैं। इसलिए ये प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं।

(ङ) निजवाचक सर्वनाम—निज अर्थात् स्वयं। जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग कर्ता अपने लिए करता है, उन्हें **निजवाचक सर्वनाम** कहते हैं; जैसे—स्वयं, खुद, अपने-आप आदि।

वह अपने कपड़े **स्वयं** धोता है।

मैं अपना काम **खुद** करता हूँ।

उपर्युक्त वाक्यों में **स्वयं, खुद** आदि शब्दों का प्रयोग कर्ता अपने लिए कर रहा है, इन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।

5. (क) मुझे **(ख)** तुम
(ग) कुछ **(घ)** स्वयं

आओ कुछ करें

- मैं, मेरा, स्वयं, खुद, अपने आप आदि।
- आप, तुम, तुमने, तुम्हारे, आपने आदि।

पाठ — 10
विशेषण

मौखिक

1. विशेषण

2. चार

लिखित

1. (क) (×) **(ख)** (✓)
(ग) (×) **(घ)** (×)
(ङ) (×)

2. (क) बारह — निश्चित संख्यावाचक
(ख) काले-काले—गुणवाचक
(ग) लाल—गुणवाचक
(घ) कुछ—अनिश्चित संख्यावाचक

3. (क) काला **(ख)** लालची
(ग) वीर **(घ)** अच्छा

4. (क) संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को **विशेषण** कहते हैं।

विशेषण के चार भेद हैं—

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण
4. परिमाणवाचक विशेषण

(ख) गुणवाचक विशेषण—संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, आकार, स्थान, रंग, स्वभाव आदि का बोध कराने वाले शब्दों को **गुणवाचक विशेषण** कहते हैं। कुछ मुख्य प्रकार के गुणवाचक विशेषण निम्नलिखित हैं—

1. गुणबोधक 2. दोषबोधक
3. आकारबोधक 4. स्थानबोधक

(ग) विशेषण की तीन अवस्थाएँ हैं—

1. मूलावस्था—जब विशेषण केवल एक विशेष्य की विशेषता का बोध कराता है, तो उसे विशेषण की **मूलावस्था** कहते हैं; जैसे—

1. वैष्णवी **अच्छी** लड़की है।
2. विशाल मेरा **प्रिय** मित्र है।
3. प्रिया **मोटी** है।

उपर्युक्त वाक्यों में **अच्छी**, **प्रिय** और **मोटी** आदि

शब्द केवल एक विशेष्य की विशेषता बता रहे हैं, अत: यह विशेषण की मूलावस्था है।

2. **उत्तरावस्था**—जब विशेषण द्वारा दो वस्तुओं या व्यक्तियों की तुलना की जाती है, तो उसे विशेषण की **उत्तरावस्था** कहते हैं; जैसे—

1. वैष्णवी तुमसे **अधिक सुंदर** है।

2. अतुल राम का विशाल से **अधिक प्रिय** मित्र है।

3. प्रमिला प्रिया से **अधिक मोटी** है।

वाक्यों में **अधिक सुंदर**, **अधिक प्रिय**, **अधिक मोटी** आदि शब्दों से विशेष्यों के बीच तुलना हो रही है। अत: यह विशेषण की उत्तरावस्था है।

3. **उत्तमावस्था**—वह विशेषण जो किसी विशेष्य को अन्य सभी से बढ़कर बताता है, उसे विशेषण की **उत्तमावस्था** कहते हैं; जैसे—1. मुंबई भारत का **विशालतम** नगर है।

2. ताजमहल भारत में **सुंदरतम** इमारत है।

उपर्युक्त वाक्यों में **विशालतम** और **सुंदरतम** आदि विशेषण की उत्तमावस्थाएँ हैं।

(घ) सर्वनाम और संकेतवाचक विशेषण में अंतर

जब वह, ये, वे आदि शब्द वाक्यों में स्वतंत्र रूप में प्रयोग होते हैं, तो इन्हें **सर्वनाम** कहते हैं, किंतु जब ये शब्द वाक्य में संज्ञा से पहले आते हैं, तो इन्हें **संकेतवाचक विशेषण** या **सार्वनामिक विशेषण** कहते हैं; जैसे—

1. वह बीमार है। वह — सर्वनाम

2. वह व्यक्ति है। वह — सार्वनामिक विशेषण

पहले वाक्य में वह शब्द स्वतंत्र रूप में प्रयुक्त हुआ है, जबकि दूसरे वाक्य में संज्ञा से पहले प्रयोग हो रहा है। अत: पहले वाक्य में वह शब्द सर्वनाम तथा दूसरे वाक्य में संकेतवाचक विशेषण है।

आओ कुछ करें

- स्वच्छ — जल
  गहरा — कुआँ
  कपटी — मित्र
  दैनिक — पत्रिका
  ढेर-सा — अनाज
  भारी — गठरी

- **1.** व्यापारिक **2.** भारतीय
  3. लोभी **4.** दानी
  5. लालची **6.** रूपवान

पाठ — 11
क्रिया

मौखिक

1. धातु।

2. दो भेद।

लिखित

1. (क) (✓) **(ख)** (✓)
(ग) (✓) **(घ)** (×)

2.

बोलना	जाना
पढ़ना	बैठना

3. (क) गौरव पुस्तक पढ़ता है।
(ख) राजा गाना गाता है।
(ग) मोनू सेब खाता है।
(घ) दीपेश फुटबॉल खेलता है।

4. (क) किसी काम के होने या करने का बोध कराने वाले शब्दों को **क्रिया** कहते हैं। जैसे—

अभी पत्र **लिख रहा है**।

वैभव खाना **खा रहा है**।

चिड़ियाँ **उड़ रही हैं**।

उपर्युक्त वाक्यों में **लिख रहा है, खा रहा है, उड़ रही हैं** आदि शब्दों से किसी-न-किसी कार्य के होने का बोध हो रहा है, इन्हें **क्रिया** कहते हैं।

(ख) सकर्मक क्रिया—जिन वाक्यों में क्रिया के साथ कर्म भी होता है, उन क्रियाओं को **सकर्मक क्रिया** कहते हैं।

एककर्मक क्रिया—जिन क्रियाओं में केवल एक कर्म होता है, **एककर्मक क्रिया** कहलाती हैं।

1. मदारी खेल दिखा रहा है।

2. तितलियाँ फूलों पर बैठी हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में **दिखा रहा है** तथा **बैठी हैं** क्रियाओं में एक-एक कर्म **खेल** तथा **फूल** हैं, इन्हें एककर्मक

क्रियाएँ कहते हैं।

द्विकर्मक क्रिया—वे क्रियाएँ जिनमें दो कर्म होते हैं, उन्हें **द्विकर्मक क्रिया** कहते हैं; जैसे—

1. खुशबू ने भिखारी को खाना दिया।
2. प्राची ने श्रेया को उपहार दिया।

उपर्युक्त वाक्यों में **खाना दिया** तथा **उपहार दिया** क्रियाओं के साथ क्रमश: दो-दो कर्म **भिखारी** और **खाना** तथा **श्रेया** और **उपहार** हैं, इन्हें द्विकर्मक क्रियाएँ कहते हैं।

(ग) अकर्मक क्रिया—जिन वाक्यों में क्रिया के साथ कर्म का प्रयोग नहीं होता है, उन्हें **अकर्मक क्रिया** कहते हैं; जैसे—

1. रवि खेलता है। 2. सुहाना खाती है।
3. वह सोता है।

उपर्युक्त वाक्यों में **खेलता है, खाती है, सोता है** आदि शब्द अकर्मक क्रियाएँ हैं।

अकर्मक क्रिया की पहचान—वाक्य में अकर्मक क्रिया की पहचान करने के लिए क्या से प्रश्न करते हैं। यदि कोई उत्तर प्राप्त न हो तो क्रिया अकर्मक क्रिया कहलाती है; जैसे—

संगीता रोती है।

प्रश्न—संगीता क्या रोती है?

उत्तर—कोई उत्तर नहीं

उपर्युक्त वाक्य में **क्या** प्रश्न करने पर कोई उत्तर नहीं मिल रहा है। अत: वाक्य में रोती है अकर्मक क्रिया है।

आओ कुछ करें

- पढ़ना रोना पीना

पाठ — 12
काल

मौखिक

1. क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के करने या होने के समय का बोध होता है, उसे **काल** कहते हैं।

2. काल के तीन भेद हैं—

काल
वर्तमानकाल भूतकाल भविष्यत्काल

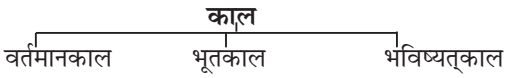

3. भविष्यत्काल के तीन भेद हैं—

1. सामान्य भविष्यत्काल
2. संभाव्य भविष्यत्काल
3. हेतु-हेतुमद् भविष्यत्काल

4. वर्तमानकाल के तीन भेद हैं—

1. सामान्य वर्तमानकाल
2. अपूर्ण वर्तमानकाल
3. संदिग्ध वर्तमानकाल

लिखित

1. (क) (×) **(ख)** (✓)
(ग) (✓) **(घ)** (✓)
(ङ) (✓)

2. (क) सामान्य भूतकाल **(ख)** हेतु-हेतुमद् भूतकाल
(ग) संदिग्ध भूतकाल **(घ)** अपूर्ण भूतकाल

3. (क) वह खेल रहा था।
(ख) वह कल दिल्ली गया।
(ग) नवनीत पुस्तक पढ़ता है।
(घ) मैं कल सर्कस देखूँगा।
(ङ) धोबी कपड़े धोएगा।

4. (क) क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के करने या होने के समय का बोध होता है, उसे **काल** कहते हैं।

काल के तीन भेद हैं—

काल
वर्तमानकाल भूतकाल भविष्यत्काल

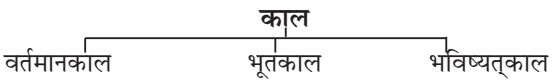

उदाहरण—1. वह सो रहा है। 2. वह सो रहा था। 3. वह सोएगा।

उपर्युक्त वाक्यों में क्रिया के होने का समय भिन्न-भिन्न है। पहले वाक्य में क्रिया चल रहे समय में, दूसरे वाक्य में क्रिया बीते हुए समय में तथा तीसरे वाक्य में क्रिया आने वाले समय में हो रही है। क्रिया के इस रूप को ही काल कहते हैं।

(ख) भूतकाल—जिस क्रिया के द्वारा कार्य के बीते हुए समय में समाप्त होने का पता चलता है, उसे **भूतकाल** कहते हैं; जैसे—

भूतकाल के छः भेद हैं–

1. सामान्य भूतकाल
2. आसन्न भूतकाल
3. पूर्ण भूतकाल
4. अपूर्ण भूतकाल
5. संदिग्ध भूतकाल
6. हेतु-हेतुमद् भूतकाल

(ग) **वर्तमानकाल**–क्रिया के जिस प्रकार से कार्य के वर्तमान समय में होने का पता चलता है, उसे **वर्तमानकाल** कहते हैं।

वर्तमानकाल के तीन भेद हैं–

1. सामान्य वर्तमानकाल
2. अपूर्ण वर्तमानकाल
3. संदिग्ध वर्तमानकाल

(घ) **भविष्यत्काल**–क्रिया के जिस रूप से कार्य के आने वाले समय में समाप्त होने का बोध हो, उसे **भविष्यत्काल** कहते हैं।

भविष्यत्काल के तीन भेद हैं–

1. सामान्य भविष्यत्काल
2. संभाव्य भविष्यत्काल
3. हेतु-हेतुमद् भविष्यत्काल

(ङ) **पूर्ण भूतकाल**–जिस काल में क्रिया के द्वारा किसी कार्य के भूतकाल में प्रारंभ होकर भूतकाल में ही समाप्त हो चुका था, भाव का बोध होता है, उसे **पूर्ण भूतकाल** कहते हैं; जैसे–

1. मैंने पाठ पढ़ा था।
2. बच्चे आए थे।

अपूर्ण भूतकाल–जिस काल में क्रिया के द्वारा किसी कार्य के भूतकाल में जारी रहने का बोध होता है, उसे **अपूर्ण भूतकाल** कहते हैं; जैसे–1. वह सोने जा रहा था। 2. हम बाज़ार जा रहे थे।

पाठ — 13
विराम-चिह्न

मौखिक

1. रुकना।
2. दो प्रकार के।
3. योजक चिह्न।

लिखित

1. (क) (✓) **(ख)** (✓)
(ग) (×) **(घ)** (✓)

2. (क) अद्‌र्ध विराम **(ख)** विस्मयादिबोधक चिह्न
(ग) लाघव चिह्न **(घ)** उप विराम
(ङ) कोष्ठक

3. (क) लिखित भाषा में विराम को प्रदर्शित करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें **विराम-चिह्न** कहते हैं।

जैसे–1. तुम्हारे यहाँ कौन आया है?
2. अरे! वह छत से गिर पड़ा।
3. राम, राहुल और आकाश मित्र हैं।

(ख) हिंदी भाषा में निम्नलिखित विराम-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है–

1.	पूर्ण विराम	।
2.	अल्प विराम	,
3.	अद्‌र्ध विराम	;
4.	प्रश्नवाचक चिह्न	?
5.	विस्मयादिबोधक चिह्न	!
6.	निर्देशक चिह्न	–
7.	दोहरे उद्‌धरण चिह्न	''----''
	इकहरे उद्‌धरण चिह्न	'----'
8.	उप विराम	:
9.	योजक चिह्न	-
10.	कोष्ठक	( )
11.	लाघव चिह्न	.

(ग) **प्रश्नवाचक चिह्न (?)**—प्रश्नसूचक वाक्यों के अंत में प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे–
1. क्या वे पढ़ रहे हैं?
2. तुम कहाँ से आए हो?

(घ) **योजक चिह्न (-)**—दो शब्दों के बीच संबंध दर्शाने के लिए योजक चिह्न का प्रयोग करते हैं; जैसे–
1. गंगा-यमुना उत्तर भारत की नदियाँ हैं।
2. वह दिन-रात मेहनत करता है।

4. (क) हम अलग-अलग बस से मथुरा जाएँगे।
(ख) होली रंगों का त्योहार है।
(ग) आहा! कितना स्वादिष्ट भोजन है।
(घ) 'गोदान' मुंशी प्रेमचंद जी का प्रमुख उपन्यास है।

- छात्र स्वयं करें।

पाठ — 14
विपरीतार्थी और समानार्थी शब्द

मौखिक

1. विलोम शब्द।

2. पर्यायवाची शब्द।

लिखित

1. (क) (✓) **(ख)** (×)
(ग) (✓) **(घ)** (✓)

2.

कुशल	सयाना	पटु
लंबोदर	विनायक	गणपति
सूर्य	भानु	रवि
भागीरथी	देवनदी	मंदाकिनी
हिमवान	हिमाचल	नगपति

3. (क) हानि **(ख)** अंत

4.

मितव्ययी	अपव्ययी
आयात	निर्यात
दिन	रात
श्वेत	श्याम
सरस	नीरस

5. (क) जो शब्द एक-दूसरे का विपरीत अर्थ बताते हैं, उन्हें **विपरीतार्थी शब्द** कहते हैं।

(ख) एकसमान अर्थ प्रकट करने के लिए समानार्थी शब्दों का प्रयोग किया जाता है। जैसे—महादेव के समानार्थी शब्द शिव, शंकर, पशुपति आदि हैं।

आओ कुछ करें

- पाना, अन्याय

1. सत्य की हमेशा जीत होती है, **असत्य** हारता है।
2. जीवन में खोना और **पाना** लगा रहता है।
3. न्याय हमेशा **अन्याय** को पराजित करता रहा है।

पाठ — 15
विभिन्न प्रकार के शब्द

मौखिक

1. संस्कृत के।

2. ऐसे शब्द जो एक शब्द के अनेक अर्थों का बोध कराएँ, उन्हें **अनेकार्थक** या **अनेकार्थी शब्द** कहते हैं।

3. हिंदी भाषा में ऐसे अनेक शब्दों का प्रयोग होता है, जो उच्चारण की दृष्टि से लगभग समान होकर भी पूर्णत: भिन्न अर्थ को उजागर करते हैं, ऐसे शब्दों को **समरूपी भिन्नार्थक शब्द** कहते हैं।

लिखित

1. (क) (✓) **(ख)** (✓)
(ग) (×)

2. (क) किसान **(ख)** उल्लू
(ग) खीर **(घ)** फूल
(ङ) उजला **(च)** घी

3.

(क) समूह	पत्ता
(ख) एक फल	साधारण
(ग) पंख	पन्द्रह दिन का समय
(घ) घड़ा	मन

4.

(क) बाण	**(ख)** बादल
तालाब	कमल
(ग) विष्णु भगवान	**(घ)** जुलाहा
हरे रंग की	पुत्र
(ङ) चलाने वाला	**(च)** संख्या
पटु	भाग

5. (क) स्वयं को दूसरे से श्रेष्ठ समझना
रमेश बात-बात पर अभिमान दिखाता है।
झूठा घमंड
मोहन को धन का अहंकार है।

(ख) कुछ नया करना
वैज्ञानिक खोज के लिए प्रयोग करते रहते हैं।
अच्छे ढंग से उपयोग में लेना
मैंने रुपयों का उपयोग कर लिया।

6. (क) निडर **(ख)** अद्‌वितीय
(ग) मृदुभाषी **(घ)** प्रजातंत्र
(ङ) निर्बल **(च)** सर्वव्यापी

7. (क) संस्कृत भाषा के वे शब्द जिनका उपयोग हिंदी में ज्यों-का-त्यों किया जाए, उन्हें **तत्सम शब्द** कहते हैं। इनके परिवर्तित रूप को **तद्‌भव शब्द** कहते हैं।

(ख) ऐसे शब्द जिनके अर्थ प्रायः समान होते हैं किंतु अर्थ में सूक्ष्म भेद होता है। इनका प्रयोग एक-दूसरे के स्थान पर नहीं किया जा सकता है, इन्हें **एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द** कहते हैं।

(ग) हिंदी भाषा में ऐसे अनेक शब्दों का प्रयोग होता है, जो उच्चारण की दृष्टि से लगभग समान होकर भी पूर्णतः भिन्न अर्थ को उजागर करते हैं, ऐसे शब्दों को **समरूपी भिन्नार्थक शब्द** कहते हैं।

जैसे–कटि – कमर
कीट – कीड़ा

आओ कुछ करें

तत्सम	तद्‌भव
घट	घड़ा
गृह	घर
घृत	घी
ओष्ठ	होंठ
दंत	दाँत
ग्राम	गाँव

पाठ – 16
मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

मौखिक

1. बातचीत।
2. अरबी भाषा का।
3. लोगों द्वारा कही गई उक्ति।
4. लोकोक्ति।

लिखित

1. (क) (✓) **(ख)** (×)
(ग) (✓) **(घ)** (×)
(ङ) (✓)

2.

उँगली उठाना	दोष लगाना
हाथ मलना	पछताना
कमर टूट जाना	हिम्मत टूट जाना
बलि का बकरा बनाना	निर्दोष को दोषी ठहराना
रंग उड़ना	चेहरा फीका पड़ना।

3. (क) **फूट-फूट कर रोना**–बहुत रोना
वाक्य–अपने पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर वह फूट-फूट कर रोया।

(ख) **टका-सा जवाब देना**–साफ़ मना करना
वाक्य–प्रियंका के मदद माँगने पर राशि ने टका-सा जवाब दे दिया।

(ग) **नाक में दम करना**–बहुत तंग करना
वाक्य–बच्चों ने कक्षा में शोर मचाकर अध्यापक की नाक में दम कर दिया।

(घ) **माथा-पच्ची करना**– सिर खपाना
वाक्य–गणित के प्रश्नों में बहुत माथा-पच्ची करनी पड़ती है।

(ङ) **आँखों में धूल झोंकना**–धोखा देना
वाक्य–चोर ने पुलिस की आँखों में धूल झोंक दी।

4. (क) **एक पंथ दो काज**–दोहरा लाभ
वाक्य–मैं परीक्षा देने आगरा जा रहा हूँ, साथ ही ताजमहल भी देख लूँगा। इसको कहते हैं–एक पंथ दो काज।

(ख) **जैसी करनी, वैसी भरनी**–जैसा काम, वैसा फल
वाक्य–तुम पढ़े नहीं इसलिए फेल हो गए। किसी ने सच ही कहा है–जैसी करनी, वैसी भरनी।

(ग) **साँच को आँच नहीं**–सच को डर नहीं
वाक्य–मैं सब कुछ स्पष्ट बता दूँगा, इसमें घबराने की कोई जरूरत नहीं है-क्योंकि साँच को आँच नहीं।

(घ) **एक अनार सौ बीमार**–एक ही वस्तु के अनेक इच्छुक होना
वाक्य–एक बस में पचास यात्री आते हैं और यात्री हैं दो सौ। यह तो वही बात हुई कि एक अनार सौ बीमार।

(ङ) **अजगर के दाता राम**—आलसी दूसरों पर आश्रित रहते हैं

वाक्य—तुम कुछ करते तो हो नहीं फिर भी पेट भर लेते हो। सच है, अजगर के दाता राम।

5. (क) जो वाक्यांश अपने शाब्दिक अर्थ से पृथक एक विशेष अर्थ का बोध कराएँ, **मुहावरे** कहलाते हैं।

जैसे—मुँह में पानी आना—जी ललचाना

वाक्य—मिठाई देखते ही कामना के मुँह में पानी आ गया।

(ख) लोकोक्ति शब्द **लोक** + **उक्ति** से मिलकर बना है। जिसका अर्थ होता है, **लोगों के द्वारा कही गई उक्ति** अथवा कहावत। लोकोक्ति भाषा को सुंदर व रोचक बनाती है। लोकोक्तियाँ अपने आप में पूर्ण वाक्य होती हैं।

जैसे—आँखों के अंधे नाम नयनसुख—गुण के विपरीत

वाक्य—उसका नाम तो सुशील है, लेकिन वह सबसे लड़ता-झगड़ता रहता है। सच ही कहा गया है—आँख के अंधे नाम नयनसुख।

आओ कुछ करें

- **गले लगना**—प्यार करना → अँगूठा दिखाना—देने से साफ इनकार करना → अपने पैरों खड़ा होना—आत्मनिर्भर होना → गरदन पर सवार होना—पीछा ही न छोड़ना।
- **1.** अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।
  2. अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग।
  3. काला अक्षर भैंस बराबर।
  4. जैसी करनी वैसी भरनी।
  5. चोर की दाढ़ी में तिनका।
  6. साँच को आँच नहीं।
  7. इस हाथ दे, उस हाथ ले।
  8. ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया।

पाठ — 17
पत्र-लेखन

मौखिक

1. अपनी बात कहने के लिए।
2. लिखित रूप में अपनी बातों को अभिव्यक्त करने के लिए।
3. दो प्रकार के औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र
4. व्यापारिक संबंध में लिखे जाने वाले पत्रों को व्यावसायिक पत्र कहते हैं।
5. पत्र की भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।

लिखित

1. (क) (✓) **(ख)** (×)
(ग) (×) **(घ)** (×)
(ङ) (✓)

2. (क) सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय,
राजकीय उ. मा. विद्यालय, सूरतगढ़।

विषय — स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र (टी.सी.) के सम्बन्ध में।

मान्यवर,

विनम्र निवेदन है कि मेरे पिताजी न्याय-विभाग में कार्यरत हैं। उनका स्थानान्तरण सूरतगढ़ से जयपुर हो गया है। मुझे भी अपने पिताजी के साथ जयपुर जाना है। अत: श्रीमानजी से अनुरोध है कि मुझे अपने विद्यालय से स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र दिलवाने की कृपा करें, ताकि मैं जयपुर के राजकीय विद्यालय में प्रवेश लेकर अपना अध्ययन जारी रख सकूँ।

इस कृपा के लिए मैं सदैव आपका आभारी रहूँगा।

दिनांक – 25 दिसम्बर, 20__

आपका आज्ञाकारी शिष्य
रोहित नंदन
कक्षा 5 अ

(ख) सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाध्यापक महोदय,
राजकीय माध्यमिक विद्यालय,
सिनसिनी (भरतपुर)।

महोदय,

विनम्र निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा पाँच (ब) का छात्र हूँ। मेरे पिताजी के पास मात्र दो बीघा खेत है और हम चार भाई-बहिन हैं। सभी अध्ययन कर रहे हैं। पिताजी की अल्प आय होने के कारण

घर का खर्चा मुश्किल से चल पाता है, जिस पर चार बच्चों के शुल्क का खर्चा उठाना असम्भव है। यदि स्थिति ऐसी ही रही तो पिताजी मुझे पढ़ने से रोक सकते हैं। ऐसी हालत में श्रीमान् जी से प्रार्थना है कि यदि मेरा शुल्क माफ कर दें तो न केवल मेरी पढ़ाई अच्छी तरह चल पाएगी वरन् पिताजी को भी सहायता पहुँचेगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी कमजोर आर्थिक स्थिति को देखते हुए अवश्य ही शुल्क मुक्ति प्रदान करने की कृपा करेंगे।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,
वीरपाल
कक्षा–5 (ब)

(ग) प्रिय मित्र विनोद,

हार्दिक बधाई।

कल निबन्ध प्रतियोगिता में तुम्हारी सफलता का समाचार सुनकर मन गद्‌गद् हो उठा। आखिर तुम्हारा श्रम और तुम्हारी पढ़ाई रंग ले ही आई। तुम हम सभी मित्रों के गर्व का आधार हो। इस सुअवसर पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो।

मुझे विश्वास है कि शीघ्र ही तुम जिलास्तरीय निबंध प्रतियोगिता में भी अपनी सफलता अंकित कराओगे।

तुमको और तुम्हारे परिवार को पुनः हार्दिक बधाई।

मिलने की आशा के साथ,

तुम्हारा मित्र
संजय कुमार

पाठ — 18
अपठित गद्यांश

1. शीर्षक–पुस्तकें हमारी मित्र
2. पुस्तकें हमें ज्ञान, मनोरंजन और विवेक देती हैं। कुमार्ग से हटाकर सन्मार्ग पर ले जाती हैं। इसलिए पुस्तकों को मित्र कहा गया है।
3. सामान्य मित्र तो संकट में साथ छोड़ जाते हैं, परन्तु पुस्तकें हमारा पूर्णतः साथ निभाती हैं। सामान्य मित्रों और पुस्तक–मित्रों में यही अंतर है।
4. जो पुस्तकें हमारी उन्नति में सहायक हों, ऐसी पुस्तकों का संग्रह करना चाहिए तथा गिरावट की ओर ले जाने वाली पुस्तकों का संग्रह नहीं करना चाहिए।
5. पुस्तकों से हमें निम्नलिखित लाभ हैं–

   (1) पुस्तकें हमें ज्ञान, मनोरंजन व विवेक देती हैं।

   (2) ये कुमार्ग से हटाकर सन्मार्ग पर ले जाती हैं।

   (3) निराश हृदयों में आशा का संचार करती हैं।

   (4) जीवन की जटिल समस्याओं को सुलझाने में मदद करती हैं।

   (5) ये जीवन भर पूर्णतः सच्चे मित्र की तरह साथ निभाती हैं।

पाठ — 19
अनुच्छेद–लेखन

1. **स्वच्छता**—स्वच्छता गन्दगी से मुक्त होने की स्थिति है। यह नियमित अभ्यास के माध्यम से स्वच्छता प्राप्त करने और बनाए रखने की प्रक्रिया है। स्वच्छता वह नैतिक गुण है, जो हमें वास्तविक स्वास्थ्य, सौंदर्य, आत्मविश्वास और खुशी की ओर ले जाता है। सामाजिक जीवन के लिए साफ–सफाई बहुत जरूरी है। स्वच्छता आत्मविश्वास बढ़ाने व दूसरों से सम्मान प्राप्त करने के लिए बहुत आवश्यक है। हमें स्वच्छता का महत्व समझना चाहिए और स्वच्छता के नियमों का पालन करते हुए अन्य सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत बनना चाहिए। स्वच्छ वातावरण से मन स्वस्थ रहता है और हमें देवत्व की ओर बढ़ाता है। घर, स्कूल व समाज को राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वच्छता के महत्त्व के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता है।

   पूरा पर्यावरण हमारा घर है जिसे हमेशा स्वस्थ रखने के लिए हमें स्वच्छ रहने की आवश्यकता है। पर्यावरण बचाओ अभियान की शुरुआत हमें स्वयं स्वच्छता को अपनाकर करनी होगी। इसलिए, यह अच्छी तरह से कहा गया है कि स्वच्छ रहो, स्वस्थ रहो।

2. **वृक्षारोपण**—वृक्षारोपण से तात्पर्य वृक्षों के विकास के लिए पौधों का लगाना और हरियाली को फैलाना है। पर्यावरण को स्वच्छ और बेहतर बनाने में वृक्षों का बहुत बड़ा योगदान होता है। ये हवा को शुद्ध व स्वच्छ रखते हैं। वर्षा होने में भी वृक्षों का योगदान होता है। वृक्ष पानी को संरक्षित करते हैं। वृक्षारोपण करने से जंगलों का विकास

किया जाता है। जिससे पेड़ पक्षियों के साथ-साथ कई जानवरों के लिए एक आवास के रूप में सहायता करते हैं। पृथ्वी पर पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने के लिए वन अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। हमें पर्यावरण के लिए वृक्षारोपण करना चाहिए। वृक्षारोपण करने के लिए हमें आसपास सभी को प्रोत्साहित करना चाहिए।

दुनिया में सबसे पहले पेड़ों का ही जन्म हुआ था। पेड़-पौधों से हमें शुद्ध व साफ ऑक्सीजन देते हैं जोकि हमारे जीने के लिए अति आवश्यक है। वृक्ष हमें फल-फूल व छाया देते हैं। पेड़ पौधे हमारे मित्र हैं, हमें इनको काटने से बचाना चाहिए।

पेड़ लगाओ-पेड़ बचाओ,
अपनी पृथ्वी को सुंदर बनाओ।

3. **बढ़ती महँगाई**—महँगाई का अर्थ होता है—वस्तुओं की कीमत में वृद्धि होना। महँगाई एक ऐसा शब्द है जिससे लोगों के जीवन व देश की अर्थव्यवस्था में उतार-चढ़ाव आते हैं। महँगाई मनुष्य की आजीविका को भी प्रभावित करती है। आज तक देश में बढ़ती महँगाई एक प्रकार की समस्या बना हुई है।

आज मानव को दैनिक उपयोग की वस्तुओं को जुटाने में कठिन परिश्रम करना पड़ रहा है। पेट्रोल, डीजल, तेल, घी, दाल, नमक आदि भी जुटाना कठिन हो गया है। गरीब व मध्यम वर्ग परिवार को महँगाई का सामना करना पड़ता है। इनकी आजीविका पर उल्टा असर पड़ रहा है।

महँगाई के चलते भूख से लोगों की मृत्यु भी हो जाती है। अत: सरकार को अपनी नीतियों में संशोधन करके इस प्रकार की नीतियाँ बनानी चाहिए, जो कि गरीब व सामान्य वर्ग की जनता के हित में हो।

जिस प्रकार हवा को केवल महसूस किया जा सकता है, ठीक उसी प्रकार महँगाई का अनुभव किया जा सकता है। महँगाई के कारण लोग अपनी आवश्यकताओं में कमी करने लगते हैं। महँगाई का एक प्रमुख कारण है कालाबाजारी है। कालाबाजारी करने से वस्तुओं की कीमत बढ़ जाती है, जिससे बाजार में महँगाई बढ़ती जाती है। सरकार को महँगाई में कमी लाने के लिए नियम बनाये जाने चाहिए। जिससे सभी को राहत मिल सके।

4. **आतंकवाद**—पूरे विश्व के लिए आतंकवाद एक समस्या बन चुका है। इसका इस्तेमाल आम लोगों और सरकार को परेशान करने के लिए किया जा रहा है। आतंकवादी अपना डर बनाने के लिए उद्योगपतियों व राजनैतिक लोगों का इस्तेमाल करते हैं और विश्व की शान्ति खत्म कर देते हैं। आतंकवाद के कारण प्रत्येक देश में सभी लोग शिकार बनाये जा रहे हैं।

बेरोजगारी, अशिक्षा, मानवीय विषमताएँ आदि अनेक कारणों से समाज में असंतोष का जन्म होता है। इस असंतोष के कारण जो लोग देश व समाज से अलग हो जाते हैं, वे ही लोग समाज में आतंकवाद को बढ़ावा देते हैं और शान्ति खत्म करते हैं।

भारत भी आतंकवाद का शिकार है। भारत के अनेक भागों—कश्मीर, पंजाब, दक्षिण भारत व अन्य हिस्सों में आतंकवादी गतिविधियों ने देश की एकता और अखण्डता के लिए खतरा पैदा कर दिया है।

समय-समय पर देश के बड़े-बड़े शहरों में हो रही आतंकवादी घटनाओं से जनता में असुरक्षा की भावना पैदा हो रही है। सभी देशों ने आतंकवाद जैसी समस्या को गंभीरता से लिया है। सभी मिलकर इस समस्या को जड़ से खत्म कर सकते हैं। आतंकवाद, देश के सभी युवाओं के विकास और वृद्धि को श्वभावित करता है। जिससे राष्ट्र विकास की गति से कई वर्ष पिछड़ जाता है। अत: इस आतंकवाद को शिक्षा के विकास द्वारा खत्म किया जा सकता है। शिक्षा का विकास प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य होना चाहिए।

5. **भ्रष्टाचार**—भ्रष्टाचार एक बीमारी की तरह है। आज भारत देश में भ्रष्टाचार तेजी से बढ़ रहा है। यदि समय रहते इसे रोका नहीं गया तो पूरे देश को अपनी चपेट में ले लेगा और देश को आंतरिक रूप से खोखला कर देगा। भ्रष्टाचार का प्रभाव अत्यंत व्यापक है। असमानता, आर्थिक, सामाजिक, पद-प्रतिष्ठा के कारण भी व्यक्ति अपने आप को भ्रष्ट बना लेता है।

समाज में फैले भ्रष्टाचार को रोकने के लिए कठोर दंड-व्यवस्था की जानी चाहिए। भ्रष्टाचार की ऐसी स्थिति बनी हुई है कि यदि कोई रिश्वत के मामले में पकड़ा जाता है तो वह रिश्वत देकर ही छूट जाता है। भ्रष्टाचार के लिए कठोर दण्ड प्रक्रिया लागू करनी होगी नहीं तो यह दीमक की तरह सब खोखला कर देगा।

दुनियाभर में भ्रष्टाचार के खिलाफ जागरूकता पैदा करने के लिए 9 दिसम्बर को 'अंतरराष्ट्रीय भ्रष्टाचार विरोधी दिवस' मनाया जाता है। भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए लोगों को स्वयं में ईमानदारी विकसित करनी होगी; जिससे कि भविष्य में आने वाली पीढ़ी तक भ्रष्टाचार के खिलाफ खड़े होने के लिए प्रोत्साहन मिले।

भ्रष्टाचार को दूर करो,
बेहतर देश का निर्माण करो।

6. **बढ़ती जनसंख्या**—वर्तमान समय में बढ़ती जनसंख्या एक विकराल समस्या बन चुकी है, जिससे निपटने के लिए जल्द से जल्द जरूरी कदम उठाये जाने की आवश्यकता है। आज हमें ही नहीं बल्कि कई देशों की जनसंख्या वृद्धि के कारण ही परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। और

बढ़ती जनसंख्या के कारण ही लोगों को खाना-पीना और रहने की भी समस्या हो रही है।

बढ़ती जनसंख्या प्राकृतिक संसाधनों को भी प्रभावित करती है। जनसंख्या वृद्धि के कारण ही पर्यावरण दिन-प्रतिदिन दूषित होता जा रहा है। जिससे अनेक प्रकार की बीमारियाँ फैल रही हैं। जिससे जनसंख्या को ही पीड़ित होना पड़ता है।

जनसंख्या वृद्धि आर्थिक विकास में भी रुकावट पैदा कर रही है जिससे लोगों को बेरोजगारी की दयनीय स्थिति का सामना करना पड़ रहा है। कम आय वाले परिवार को महँगाई के दौर में जो कि जनसंख्या वृद्धि के कारण होती है, रोटी-कपड़ा-मकान जैसी मूलभूत सुविधाओं से वंचित रहना पड़ रहा है।

बढ़ती जनसंख्या आने वाली पीढ़ी के लिए अभिशाप बन रही है, क्योंकि इसके कारण अशिक्षा, आर्थिक मंदी की समस्या, स्वास्थ्य सेवाओं में कमी जैसी समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

बढ़ती जनसंख्या के कारण देश के विकास की रफ्तार कम हो जाती है। जिससे विकसित देश बनने में समय लगता है। हमें इस समस्या के लिए उचित उपाय करने होंगे।

'जनसंख्या पर रोक लगाएँ,
देश को उन्नत कर के दिखाएँ।'

प्रश्न-पत्र : 1

1. (क) (ii) देवनागरी **(ख)** (i) तेलुगू
(ग) (iii) तीन **(घ)** (ii) अविकारी शब्द
(ङ) (ii) जातिवाचक

2.

सुनारिन	स्वामी
बाघ	हंस
पंडिताइन	श्रीमती

3. (क) जिन शब्दों से किसी वस्तु या व्यक्ति की संख्या का बोध होता है, उन्हें **वचन** कहते हैं।

एक **तितली** उड़ रही है।
तीन **तितलियाँ** उड़ रही हैं।
एक **कुत्ता** भाग रहा है।
चार **कुत्ते** भाग रहे हैं।

ऊपर दिए गए वाक्यों में **तितली** और **कुत्ता** शब्द संख्या में एक होने का तथा **तितलियाँ** और **कुत्ते** शब्द संख्या में एक से अधिक होने का बोध करा रहे हैं।

(ख) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ इनका संबंध पता चलता है, उसे **कारक** कहते हैं।

कारक के आठ प्रकार हैं–

1. कर्ता कारक – ने
2. कर्म कारक – को
3. करण कारक – से, के द्वारा
4. संप्रदान कारक – के लिए, को
5. अपादान कारक – से (अलग होना)
6. संबंध कारक – का, के, की, रा, रे, री
7. अधिकरण कारक – में, पर
8. संबोधन कारक – हे! अरे! ओह!

(ग) **अपादान कारक**–जिन शब्दों से किसी वस्तु या व्यक्ति का अलग होना पाया जाए, उसे **अपादान कारक** कहते हैं। इसका परसर्ग **से** है; जैसे–

1. पेड़ **से** पत्ते गिरते हैं।
2. वह छत **से** गिर पड़ा।

संबंध कारक–जो शब्द वाक्य में आए अन्य शब्दों से संबंध बताते हैं, उन्हें **संबंध कारक** ठकहते हैं। इसके परसर्ग **का, के, की** तथा **रा, री, रे** हैं।

1. यह पेन रुचि **का** है।
2. वे हमा**रे** कक्षाध्यापक हैं।

(घ) **निश्चयवाचक सर्वनाम**–जो सर्वनाम किसी पास अथवा दूर की वस्तु या व्यक्ति का एक निश्चित बोध कराए, उसे **निश्चयवाचक सर्वनाम** कहते हैं; जैसे–यह, वह, ये, वे आदि।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम–जो सर्वनाम किसी पास अथवा दूर की वस्तु या व्यक्ति का एक निश्चित बोध न कराए, उसे **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** कहते हैं; जैसे–कोई, कुछ, किसका आदि।

(ङ) **प्रश्नवाचक सर्वनाम**–जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, उन्हें **प्रश्नवाचक सर्वनाम** कहते हैं; जैसे–कौन, क्या, किसने, किसे, किससे आदि।

प्रश्न-पत्र : 2

1. (क) (×) **(ख)** (×)
(ग) (✓) **(घ)** (✓)
(ङ) (✓)

2. (क) इकहरा उद्धरण चिह्न **(ङ)** विस्मयादि-बोधक चिह्न
(ख) पूर्ण विराम **(च)** अल्प विराम
(ग) प्रश्नवाचक चिह्न **(छ)** अर्द्ध विराम
(घ) उपविराम **(ज)** योजक चिह्न

3. (क) (उदास होना) आज तुम्हारा मुँह क्यों उतरा हुआ है।
(ख) (बढ़-चढ़कर बातें करना) महेश अपने भाई के बारे में डींग मारता फिरता है।

(ग) (जोर-जोर से रोना) माँ ने जब नीलू को खिलौना नहीं दिया तो वह फूट-फूटकर रोने लगी।

4. (क) सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय,
राजकीय उ. मा. विद्यालय, सूरतगढ़।

विषय — स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र (टी.सी.) के सम्बन्ध में।

मान्यवर,

विनम्र निवेदन है कि मेरे पिताजी न्याय-विभाग में कार्यरत हैं। उनका स्थानान्तरण सूरतगढ़ से जयपुर हो गया है। मुझे भी अपने पिताजी के साथ जयपुर जाना है। अतः श्रीमानजी से अनुरोध है कि मुझे अपने विद्यालय से स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र दिलवाने की कृपा करें, ताकि मैं जयपुर के राजकीय विद्यालय में प्रवेश लेकर अपना अध्ययन जारी रख सकूँ।

इस कृपा के लिए मैं सदैव आपका आभारी रहूँगा।

दिनांक – 25 दिसम्बर, 20_ _

आपका आज्ञाकारी शिष्य
रोहित नंदन
कक्षा 5 अ

5. (क) मेरे आदर्श अध्यापक—हमारे विद्यालय में अनेक अध्यापक हैं परन्तु मुझे मेहुल वर्मा, जो मेरे कक्षा अध्यापक हैं, बहुत अच्छे लगते हैं। वे हमें हिंदी पढ़ाते हैं। उनका स्वभाव सरल व स्पष्टवादी है। वे पढ़ाई के साथ-साथ अन्य गतिविधियों में भाग लेने के लिए सभी छात्रों को प्रेरित करते हैं। उन्हें देखकर मुझे अपने प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री की याद आ जाती है। वे उनकी तरह छोटी कद-काठी के हैं, उनकी बातों में सदैव आत्मविश्वास झलकता है। वे मेरे आदर्श हैं। श्री मेहुल वर्मा जी का पढ़ाने का ढंग बहुत अच्छा है। वे हर पाठ को विस्तारपूर्वक समझाते हैं, जब तक पाठ प्रत्येक बच्चे की समझ में नहीं आता जाता तब तक वे अन्य पाठ नहीं पढ़ाते तथा बच्चों की पाठ्यक्रम-संबंधी समस्या को बारी-बारी से सुनते हैं और उनका निवारण भी करते हैं। उन्हें कभी भी क्रोध नहीं आता, उनके चेहरे पर सदैव मुस्कान रहती है। वे पढ़ाई में कमज़ोर बच्चे पर अधिक ध्यान देते हैं। कभी-कभी तो अतिरिक्त कक्षा लेकर उन्हें पढ़ा देते हैं। सदैव ज़रूरतमंदों की मदद के लिए तत्पर रहते हैं। मैं अपने अध्यापक श्री मेहुल वर्मा जी का बहुत आदर व सम्मान करता हूँ। मैं भी उनके पदचिह्नों पर चलकर एक दिन उनका नाम रोशन करूँगा।

(ख) भ्रष्टाचार—भ्रष्टाचार एक बीमारी की तरह है। आज भारत देश में भ्रष्टाचार तेजी से बढ़ रहा है। यदि समय रहते इसे रोका नहीं गया तो पूरे देश को अपनी चपेट में ले लेगा और देश को आंतरिक रूप से खोखला कर देगा। भ्रष्टाचार का प्रभाव अत्यंत व्यापक है। असमानता, आर्थिक, सामाजिक, पद-प्रतिष्ठा के कारण भी व्यक्ति अपने आप को भ्रष्ट बना लेता है।

समाज में फैले भ्रष्टाचार को रोकने के लिए कठोर दंड-व्यवस्था की जानी चाहिए। भ्रष्टाचार की ऐसी स्थिति बनी हुई है कि यदि कोई रिश्वत के मामले में पकड़ा जाता है तो वह रिश्वत देकर ही छूट जाता है। भ्रष्टाचार के लिए कठोर दण्ड प्रक्रिया लागू करनी होगी नहीं तो यह दीमक की तरह सब खोखला कर देगा।

दुनियाभर में भ्रष्टाचार के खिलाफ जागरूक्ता पैदा करने के लिए 9 दिसम्बर को 'अंतरराष्ट्रीय भ्रष्टाचार विरोधी दिवस' मनाया जाता है। भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए लोगों को स्वयं में ईमानदारी विकसित करनी होगी; जिससे कि भविष्य में आने वाली पीढ़ी तक सुआचारण व भ्रष्टाचार के खिलाफ खड़े होने के लिए प्रोत्साहन मिले।

भ्रष्टाचार को दूर करो,
देश का निर्माण करो।

3. बढ़ती महँगाई—महँगाई का अर्थ होता है—वस्तुओं की कीमत में वृद्धि होना। महँगाई एक ऐसा शब्द है जिससे लोगों के जीवन व देश की अर्थव्यवस्था में उतार-चढ़ाव आते हैं। महँगाई मनुष्य की आजीविका को भी प्रभावित करती है। आज तक देश में बढ़ती महँगाई एक प्रकार की समस्या बना हुई है।

आज मानव को दैनिक उपयोग की वस्तुओं को जुटाने में कठिन परिश्रम करना पड़ रहा है। पेट्रोल, डीजल, तेल, घी, दाल, नमक आदि भी जुटाना कठिन हो गया है। गरीब व मध्यम वर्ग परिवार को महँगाई का सामना करना पड़ता है। इनकी आजीविका पर उल्टा असर पड़ रहा है।

महँगाई के चलते भूख से लोगों की मृत्यु भी हो जाती है। अतः सरकार को अपनी नीतियों में संशोधन करके इस प्रकार की नीतियाँ बनानी चाहिए, जो कि गरीब व सामान्य वर्ग की जनता के हित में हों।

महँगाई के कारण लोग अपनी आवश्यकताओं में कमी करने लगते हैं। महँगाई का एक प्रमुख कारण कालाबाजारी है। कालाबाजारी करने से वस्तुओं की कीमत बढ़ जाती है, जिससे बाजार में महँगाई बढ़ती जाती है। सरकार को महँगाई में सुधार लाने के लिए नियम बनाये जाने चाहिए। जिससे सभी को राहत मिल सके।

❑❑